इकाई 14 मिश्र वाक्य 1

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य
14.1 प्रस्तावना
14.2 मिश्र वाक्य की संरचना
14.3 मिश्र वाक्य के प्रकार
14.4 संज्ञा उपवाक्य
  14.4.1 संरचना
  14.4.2 संज्ञा उपवाक्य के प्रकार्य
  14.4.3 संज्ञा उपवाक्य का संज्ञा पद में रूपांतरण
  14.4.4 क्रिया रूपों पर प्रतिबंध
14.5 सारांश
14.6 शब्दावली
14.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें
14.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप :

- मिश्रवाक्य की संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे,
- आप सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्रवाक्य में अंतर बता सकेंगे
- मुख्य (स्वतंत्र) उपवाक्य और गौण (आश्रित) उपवाक्य के बीच अंतर समझा सकेंगे
- संज्ञा उपवाक्य की संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- वाक्य में संज्ञा उपवाक्य, कर्ता, कर्म और पूरक के रूप में किस प्रकार प्रयुक्त होते हैं, इस बारे में बता सकेंगे,
- संज्ञा उपवाक्य कैसे संज्ञा पदों में रूपांतरित हो जाते हैं, इसकी प्रक्रिया समझा सकेंगे,
- संज्ञा उपवाक्यों के मुख्य लक्षण और उन पर लगे प्रतिबंधों की जानकारी दे सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

आप पिछली इकाइयों में पढ़ चुके हैं कि वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–*सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य* और मिश्र वाक्य। इसमें से सरल और संयुक्त वाक्यों के बारे में आप इकाई 12 तथा 13 में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। आप पढ़ चुके हैं कि *जिस वाक्य में केवल एक उपवाक्य होता है उसे* **सरल वाक्य** *कहते हैं*, जैसे "**वाक्य** (1) *जिन वाक्यों में दो या अधिक उपवाक्य होते हैं वे या तो* **संयुक्त वाक्य** *होते हैं, या* **मिश्र वाक्य**। *संयुक्त वाक्य में सभी उपवाक्य स्वतंत्र/मुख्य होते हैं*, जैसे वाक्य (2) *मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य स्वतंत्र/मख्य होता है और बाकी आश्रित/गौण*, जैसे वाक्य (3)।

देखिए :

1) पिताजी नाराज़ हैं। (सरल वाक्य)
2) पिताजी नाराज़ हैं और भाई साहब को डाँट रहे हैं। (संयुक्त वाक्य)
3) लगता है कि पिताजी नाराज हैं। (मिश्र वाक्य)

ऊपर बताए तीन वाक्य प्रकारों में से सरल और संयुक्त वाक्यों के बारे में पिछली दो इकाइयों में आप पढ़ चुके हैं। इस इकाई में हम आपको मिश्रवाक्य के बारे में बताएँगे।

14.2 मिश्र वाक्य की संरचना

प्रस्तावना में हमने यह संकेत दिया था कि मिश्रवाक्य में एक उपवाक्य स्वतंत्र/मुख्य होता है और बाकी उपवाक्य आश्रित/गौण होते हैं। पिछली इकाई में आप स्वतंत्र और आश्रित उपवाक्य के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त कर चुके हैं।

स्वतंत्र या मुख्य उपवाक्य, वाक्य में अपने अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दूसरे उपवाक्य पर आश्रित नहीं होता, लेकिन आश्रित या गौण उपवाक्य अपने अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए एक अन्य उपवाक्य पर आश्रित होता है जो सामान्यतः मुख्य उपवाक्य होता है। इस तथ्य को समझाने के लिए हमने पिछली इकाई में दो उदाहरण दिए थे।

4) शेखर बाज़ार गया और मेरे लिए एक साइकिल लाया। (संयुक्त वाक्य)

5) शेखर एक साइकिल लाया जो बहुत पुरानी है। (मिश्र वाक्य)

वाक्य (4) में दो उपवाक्य हैं: (i) शेखर बाज़ार गया, और (ii) (वह) मेरे लिए एक साइकिल लाया। ये दोनों ही उपवाक्य अपनी-अपनी जगह पर स्वतंत्र हैं और इनका स्वतंत्र रूप से भी प्रयोग संभव है, क्योंकि ये अपने अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए एक दूसरे पर आश्रित नहीं हैं। इसके विपरीत वाक्य (5) का पहला उपवाक्य तो स्वतंत्र है, लेकिन दूसरा उपवाक्य "जो बहुत पुरानी है" पहले उपवाक्य पर आश्रित है, क्योंकि "जो" शब्द का अर्थ तब तक स्पष्ट नहीं होता जब तक "साइकिल" शब्द का उल्लेख न हो और यह शब्द पहले उपवाक्य में मौजूद है। इस प्रकार इस वाक्य में पहला उपवाक्य मुख्य या स्वतंत्र हुआ और दूसरा उपवाक्य आश्रित या गौण। संयुक्त तथा मिश्र वाक्यों की जो परिभाषाएँ हमने ऊपर दी हैं उनके आधार पर अब आप स्वयं इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि वाक्य (4), जिसमें दोनों स्वतंत्र/मुख्य उपवाक्य हैं, *संयुक्त वाक्य* है और वाक्य (5) जिसका एक उपवाक्य स्वतंत्र है और दूसरा आश्रित, *मिश्रवाक्य* है।

पिछली इकाई में आप यह पढ़ चुके हैं कि वाक्य (4-5) में आए शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं। ये शब्द दो उपवाक्यों को आपस में अर्थ की दृष्टि से जोड़ते हैं। जब भी दो या अधिक उपवाक्य आपस में जुड़ते हैं तो उनके बीच प्रायः एक ऐसा शब्द होता है जो उनको आपस में जोड़ता है या एक सूत्र में बांधता है। संयुक्त वाक्यों के दो उपवाक्यों को जोड़ने वाले ऐसे शब्द होते हैं–"और", "तथा" "एवं", "लेकिन", "या", आदि। देखिए वाक्य (4) और नीचे के ये वाक्य:

6) पानी गरम तो हो गया लेकिन अभी उबला नहीं है।

7) तुम खुद चले जाओ या किसी को भेज दो।

मिश्रवाक्यों के विभिन्न उपवाक्यों को जोड़ने वाले इस प्रकार के समुच्चयबोधक अव्यय हैं–"कि", "जो", "जहाँ", "जब" "तब/तो" अगर..... .....तो" आदि। देखिए:

8) मैं एक आदमी को जानता हूँ जो तुम्हारा काम करवा सकता है।

9) उसने भी वहाँ मकान बनवाया है जहाँ मैं बनवाना चाहता था।

10) जब आप लौटें तो मुझे फोन कर दें।

11) उन्होंने बताया कि सरला ने शादी कर ली है।

12) अगर तुम समय पर नहीं पहुँचे तो तुम्हारा नाम कट जाएगा।

13) जिन्हे अपना पैसा वापस चाहिए वे इस फ़ार्म को भर लें।

अगर आप ऊपर के वाक्यों को ध्यान से पढ़ें तो आपको मिश्रवाक्यों के बारे में दो और बातों का पता चलेगा–पहला तो यह कि कई वाक्यों में समुच्चयबोधक अव्यय अकेले न आकर जोड़ों के रूप में आते हैं जैसे वाक्य (10) में "जब–तो" और वाक्य (12) में

"अगर–तो"। दूसरा यह कि मिश्रवाक्यों में उपवाक्यों का एक क्रम हो ज़रूरी नहीं। कई गौण उपवाक्य संदर्भ की आवश्यकता के अनुसार वाक्य के प्रारंभ, मध्य और अंत तीनों स्थानों पर आ सकते हैं, जैसा कि नीचे के उदाहरणों से आपको स्पष्ट होगा। इन उदाहरणों से आपको यह भी स्पष्ट होगा कि तीनों स्थितियों में, मूल अर्थ के समान रहते हुए भी, क्रम-परिवर्तन से वक्ता के दृष्टिकोण या जिस बात पर वह बल देना चाहता है उसमें थोड़ा-बहुत अंतर आ सकता है। देखिए :

5) शेखर एक साइकिल लाया जो बहुत पुरानी है।

14) शेखर जो साइकिल लाया वह बहुत पुरानी है।

15) जो साइकिल शेखर लाया वह बहुत पुरानी है।

अभ्यास 1

क) कोष्ठक में दिए विकल्पों में से सही शब्द छाँटकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1) जिस वाक्य के दोनों उपवाक्य मुख्य उपवाक्य हों, उसे.....वाक्य कहते हैं। (मिश्र/संयुक्त/सरल)

2) मिश्रवाक्य में एक उपवाक्य मुख्य और दूसरा उपवाक्य.....होता है। (गौण/स्वतंत्र/सरल)

3) "और", "लेकिन" "कि".....के उदाहरण हैं। (संज्ञा/क्रियाविशेषण/समुच्चयबोधक अव्यय)

4) मिश्रवाक्यों के गौण उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं : संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और.....उपवाक्य। (सरल/मुख्य/क्रिया विशेषण)

5) गौण उपवाक्य अपने अर्थ की स्पष्टता के लिए.....उपवाक्य पर आश्रित होता है। (सरल, मुख्य, मिश्र)

ख) नीचे लिखे कथनों के सामने सही/गलत लिखें।

1) गौण उपवाक्य केवल वाक्य के मध्य और अंत में ही प्रयुक्त हो सकते हैं। (सही/गलत)

2) संज्ञा उपवाक्य वाक्य में कर्ता और कर्म दोनों स्थितियों में प्रयुक्त हो सकते हैं। (सही/गलत)

3) संज्ञा उपवाक्य हमेशा स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं। (सही/गलत)

4) संज्ञा उपवाक्य से पूर्व "कि" का लोप संभव नहीं। (सही/गलत)

5) समुच्चयबोधक अव्यय दो उपवाक्यों को जोड़ता है। (सही/गलत)

ग) नीचे लिखे वाक्य संयुक्त वाक्य हैं या मिश्रवाक्य। कोष्ठक में लिखिए :

1) मैंने बहुत कोशिश की लेकिन मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। ( )

2) अध्यापक ने बताया कि सभी प्रश्न पाठ्यपुस्तकों से ही पूछे जाएंगे। ( )

3) जो लोग समय पर नहीं पहुँचेंगे उन्हें भीतर आने की अनुमति नहीं मिलेगी। ( )

4) जब मैं घर पहुँचा तो सभी सो रहे थे। ( )

5) पिताजी अखबार पढ़ रहे थे या सो रहे थे? ( )

14.3 मिश्र वाक्य के प्रकार

आपने ऊपर दिए उदाहरणों मे मिश्र वाक्यों के कई प्रकार के नमूने देखे। आपने देखा कि गौण उपवाक्य कई तरह के हो सकते हैं–किसी के पहले "कि" का प्रयोग होता है, किसी के पहले "जो" "जिस", "जिन" का प्रयोग होता है और किसी के पहले "जब", "जहाँ" "अगर", आदि का। कहने की ज़रूरत नहीं कि गौण उपवाक्यों की इस विशेषता से पूरे वाक्य में उनकी भूमिका या प्रकार्य पर असर पड़ता है। मुख्य उपवाक्य के साथ गौण

उपवाक्य का क्या संबंध है इसका निर्धारण भी इस विशेषता के आधार पर होता है। आइए, गौण उपवाक्यों की इन्हीं विशेषताओं को आधार मानकर मिश्रवाक्यों के इन वर्गों या प्रकारों पर विचार करें।

वाक्य में गौण उपवाक्य संज्ञा, विशेषण या क्रियाविशेषण का काम करते हैं और इसी आधार पर गौण उपवाक्यों के तीन प्रकार माने गए हैं:

क) संज्ञा उपवाक्य

ख) विशेषण उपवाक्य

ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य

संज्ञा उपवाक्य वाक्य में संज्ञा का काम करते हैं। दूसरे शब्दों में, जो भूमिका वाक्य में संज्ञापद की होती है लगभग वही भूमिका संज्ञा उपवाक्यों की होती है। अंतर केवल यह है कि *संज्ञापद में एक या अधिक शब्द होते हैं जबकि संज्ञा उपवाक्य में एक पूरा उपवाक्य ही संज्ञापद का काम करता है*, जैसे:

11) उन्होंने बताया कि सरला ने शादी कर ली है।

16) पिताजी ने कहा कि कल डॉक्टर बाहर जा रहा है।

इसी प्रकार वाक्य में **विशेषण उपवाक्य** विशेषण का काम करते हैं, *अर्थात् विशेषण उपवाक्य, मुख्य वाक्य की या मुख्य वाक्य के किसी संज्ञा शब्द की विशेषता बताते हैं*, जैसे:

8) मैं एक आदमी को जानता हूँ जो तुम्हारा काम कर सकता है।

5) शेखर एक साइकिल लाया है जो बहुत पुरानी है।

इसी प्रकार वाक्य में **क्रियाविशेषण उपवाक्य** *क्रिया-विशेषण का काम करते हैं जिनमें स्थान, समय, रीति, शर्त आदि का बोध निहित होता है*, जैसे:

9) उसने भी वहीं मकान बनवाया है जहाँ मैं बनाना चाहता था।

10) जब आप लौटें तो मुझे फ़ोन कर दें।

आगे इन्हीं तीन प्रकार के उपवाक्यों से बनने वाले मिश्रवाक्यों के बारे में आपको जानकारी दी जाएगी। इस इकाई के शेष अंश में हम आपको मिश्रवाक्यों के पहले प्रकार–**संज्ञा उपवाक्य**–के बारे में ही जानकारी देंगे। अन्य दो प्रकारों–विशेषण उपवाक्य तथा क्रियाविशेषण उपवाक्य–का परिचय आपको अगली इकाई 15 में दिया जाएगा।

14.4 संज्ञा उपवाक्य

14.4.1 संरचना

ऊपर आप पढ़ चुके हैं कि जो उपवाक्य वाक्य में संज्ञा का काम करते हैं उन्हें **संज्ञा उपवाक्य** कहते हैं। दूसरे शब्दों में, जिस प्रकार्य के लिए संज्ञा उपवाक्य प्रयुक्त होते हैं, उस प्रकार्य के लिए या उस भूमिका में, संज्ञापद प्रयुक्त हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, नीचे के वाक्य देखिए:

16) पिताजी ने कहा कि कल डॉक्टर बाहर जा रहे हैं।

17) पिताजी ने एक बात कही।

वाक्य (17) में "एक बात" संज्ञा है और "कहना" क्रिया के कर्म के रूप में प्रयुक्त है। वाक्य (16) में भी "कि कल डॉक्टर बाहर जा रहे हैं– उपवाक्य की वाक्य में वही प्रकार्य या भूमिका है जो वाक्य (17) में संज्ञापद "बात" की। अंतर केवल यह है कि एक संज्ञापद के रूप में प्रयुक्त है और दूसरा उपवाक्य के रूप में। दोनों ही "कहना" क्रिया के कर्म हैं।

संज्ञा उपवाक्य को आप संरचना या रूप के आधार पर भी पहचान सकते हैं। जिस उपवाक्य से पहले "कि" का प्रयोग हो वह सामान्यतः (हमेशा नहीं) संज्ञा उपवाक्य होता

है, लेकिन ध्यान रहे कि कभी-कभी वाक्य में "कि" का लोप हो जाता है और कुछ संदर्भों में "कि" के प्रयोग पर प्रतिबंध भी है। नीचे दिए गए वाक्य देखिए:

18) मैं जानता था कि आप नहीं जाएँगे। ("कि" का प्रयोग)

19) मैं जानता था आप नहीं जाएँगे। ("कि" का ऐच्छिक लोप)

20) आप नहीं जाएँगे मैं जानता था। ("कि" के प्रयोग पर प्रतिबंध)

वाक्य (18) में "कि" का प्रयोग है, वाक्य (19) में "कि" का ऐच्छिक लोप है, वाक्य (20) में "कि" के प्रयोग पर प्रतिबंध है।

क्या आप ऐसा उपवाक्य भी बता सकते हैं जिसमें "कि" का प्रयोग भी हो और वह संज्ञा उपवाक्य भी न हो? देखिए, वाक्य (21) और (22) में गौण उपवाक्यों से पूर्व "कि" का प्रयोग भी है और वे संज्ञा उपवाक्य भी नहीं है, क्रिया विशेषण उपवाक्य हैं (जिसके बारे में आप बाद में पढ़ेंगे), अथवा संयुक्त वाक्य में प्रयुक्त मुख्य वाक्य हैं:

21) वह इतना कमज़ोर है कि चल भी नहीं सकता। (क्रि.वि. उपवाक्य)

22) तुम आज यहीं रहोगे कि जाओगे? (संयुक्त वाक्य)

वाक्य (21) में "कि चल भी नहीं सकता" क्रियाविशेषण उपवाक्य है जिसके बारे में हम दूसरी इकाई में पढ़ेंगे। वाक्य (22) में "कि" का प्रयोग "या" के अर्थ में हुआ है, जैसे "तुम आज यहीं रहोगे या (तुम आज) जाओगे"। यह संयुक्त वाक्य है जिसके बारे में आप पिछली इकाई में पढ़ चुके हैं।

14.4.2 संज्ञा उपवाक्य के प्रकार्य

आप जानते हैं वाक्य में संज्ञापद कर्ता और कर्म दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकता है। इसी प्रकार *संज्ञा उपवाक्य भी वाक्य में कर्ता और कर्म दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकता है।* देखिए:

क) **कर्ता के स्थान पर**

23) यह सच है कि पहल मैंने ही की थी। (अंत)

24) तुम्हारा यह भय कि घर वाले तुम्हें तंग करेंगे, निर्मूल है। (मध्य)

25) लगता है कि वह काफ़ी दुखी है। (अंत)

ख) **कर्म के स्थान पर**

26) पिताजी ने कहा कि नाश्ते में वे कुछ नहीं लेंगे।

27) डॉक्टर ने आते ही पूछा कि कलवाला मरीज़ कहाँ है।

28) मैं चाहता हूँ कि तुम लोग खूब उन्नति करो।

29) क्या आप जानते हैं यह किसका लड़का है?

संज्ञा उपवाक्यों का प्रयोग इन्हीं दो प्रकार्यों तक ही सीमित नहीं है। अगर आप भाषा का वास्तविक प्रयोग देखें तो आप पाएँगे *कि संज्ञा उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के किसी पद के पूरक के रूप में भी प्रयुक्त होता है।* यह पद सामान्यतः सर्वनाम "यह" या "ऐसा" भी हो सकता है। कोई भाववाचक संज्ञा भी हो सकता है जो "कि उपवाक्य" (संज्ञा उपवाक्य) की आकांक्षा करता हो। या कृदंत रूप में प्रयुक्त कोई क्रिया भी हो सकती है जो पूरक के रूप में 'कि-उपवाक्य' की आकांक्षा करता हो देखिए:

ग) **कृदंत आदि के पूरक के रूप में**

30) सतीश यह सुनकर बड़ा खुश हुआ कि उसकी खोई घड़ी मिल गई है। (कृदंत "सुनकर" का पूरक)

31) मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि टाइप का सारा काम ज्यों का त्यों पड़ा हुआ है। (कृदंत "देखकर" का पूरक)

32) भाई साहब इस चिंता में हैं कि दूसरी मंज़िल कैसे पूरी की जाए। इस चिंता में

घ) **सर्वनाम "यह" या भाववाचक संज्ञाओं आदि के पूरक के रूप में**

33) यह गलत है कि मैंने लोगों को इसके लिए उकसाया। (यह)

34) मेरा भय कि तुम्हारे घरवाले नहीं मानेंगे, सच निकला। (मेरा भय)

35) उनका यह कहना कि ऐसा पहले भी होता रहा है, गलत है। (यह कहना

36) कभी-कभी ऐसा होता है कि गाड़ी आती ही नहीं। (ऐसा)

37) ऐसा है कि तुम अब उस तरफ़ जाओ ही नहीं। (ऐसा)

38) एक दिन मैं क्या देखता हूँ कि उस वीरान कोठी में एक नया परिवार आकर बस गया है। (क्या)

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित सभी उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य हैं लेकिन आप पाएँगे कि इनमें से हर उपवाक्य का एक पूर्व संकेतक मुख्य उपवाक्य में मौजूद है। जैसे: "यह", "मेरा भय", "यह कहना" "ऐसा" "क्या" आदि। ये पूर्वसंकेतक इस बात के सूचक हैं कि इनके पूरक दूसरे उपवाक्यों में मौजूद हैं। अगर इनके साथ इनके पूरक उपवाक्य न हों तो इनका अर्थ अपूर्ण है। इसीलिए इस कोटि के संज्ञा उपवाक्यों को कभी-कभी **"पूरक उपवाक्य"** भी कहा जाता है।

ऊपर के विवेचन से आपको यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि हर मुख्य उपवाक्य या क्रिया के साथ संज्ञा उपवाक्य (या कि-उपवाक्य) का प्रयोग हो सकता है। वास्तव में संज्ञा उपवाक्य का प्रयोग बहुत ही कम क्रियाओं के साथ संभव है। सामान्यतः इच्छा, कथन या जानकारी से संबंधित कुछ क्रियाओं के साथ ही संज्ञा उपवाक्यों का प्रयोग सहज है, जैसे, चाहना, इच्छा करना, की अभिलाषा होना, मन करना, कहना, बोलना, पूछना, जानना, उत्तर देना, मालूम होना, पता होना आदि।

14.4.3 संज्ञा उपवाक्य का संज्ञा पद में रूपांतरण

आप जानते हैं कि वास्तविक जीवन में हम एक बात को कहने के लिए एक से अधिक तरीकों का इस्तेमाल करते हैं—कभी उसी बात को एक वाक्य में कहते हैं, कभी दो या तीन वाक्यों में। कभी एक ही बात को एक पद या पदबंध में सिमटा कर कहते हैं और कभी एक उपवाक्य या पूर्ण वाक्य के रूप में फैलाकर कहते हैं। संज्ञा उपवाक्यों के संबंध में भाषा की यह विशेषता और अधिक उभर कर सामने आती है। कुछ संज्ञा उपवाक्यों की यह विशेषता होती है कि वे सामान्य संज्ञापद में रूपांतरित होकर मुख्य उपवाक्य के भीतर ही समाहित हो जाते हैं, जैसे:

39) मैं चाहता हूँ कि मैं सबसे बाद में बोलूँ।
मैं सबसे बाद में बोलना चाहता हूँ।

40) उनका विचार है कि वे दो-तीन दिन और रुकें।
उनका विचार दो-तीन दिन और रुकने का है।

41) मेरा मन कर रहा है कि मैं आज ही लौट जाऊँ।
मेरा आज ही लौटने का मन कर रहा है।

42) गुरुजी ने कहा है कि मैं कल तक काम खत्म कर दूँ।
गुरुजी ने मुझे कल तक काम खत्म करने को कहा है।

43) डॉक्टर ने कहा है कि तीन-तीन घंटे में दवा खा लें।
डॉक्टर ने तीन-तीन घंटे में दवा खाने को कहा है।

उपवाक्य से संज्ञापद में रूपांतरित होने की इस प्रक्रिया को नामिकीकरण भी कहा जाता है। यहाँ आपको यह याद रखना चाहिए कि यह प्रक्रिया सभी संज्ञा उपवाक्यों के साथ संभव नहीं। कुछ खास वर्ग की क्रियाओं और कार्य व्यापार सदर्भ में ही संज्ञा उपवाक्यों का संज्ञा पदों में रूपांतरण संभव है। उदाहरण के लिए (वाक्य 44) तो संभव है लेकिन वाक्य (45) संभव नहीं। जैसे:

44) उन्होंने मुझे कल फिर आने को कहा है। (सही)

45) *उन्होंने मुझे कल फिर आने को बताया है। (गलत)

14.4.4 क्रिया रूपों पर प्रतिबंध

आप रोज सैकड़ों-हज़ारों वाक्य बोलते हैं और संज्ञा उपवाक्यों का भी प्रयोग उनमें कम नहीं होता। लेकिन शायद आपने कभी गौर किया होगा कि कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जिनका प्रयोग अगर आप मुख्य उपवाक्य में करते हैं तो उनके 'कि-उपवाक्य' (संज्ञा उपवाक्य) में एक खास तरह के क्रिया रूप का ही इस्तेमाल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आप मुख्य उपवाक्यों में चाहना-वर्ग तथा संभावना-वर्ग की क्रियाओं का प्रयोग करते हैं तो इसके "कि-उपवाक्यों" का क्रियारूप भी इच्छार्थक होगा, जैसे "जाए", "जाएँ", "जाऊँ", "जाओ", "हो" आदि। देखिए:

46) मैं चाहता हूँ कि आप लोग बैठ जाएँ। (*जाएँगे, *रहे हैं)

47) वह चाहता था कि सीता भी साथ चले। (*चलती है, *चलेंगी)

48) मेरी इच्छा है कि मैं भी कुछ बोलूँ। (*बोलूँगा, *बोला)

49) संभव है वे आज भी न आएँ। (*आएँगे, *आते हैं)

50) हो सकता है कि इस साल भी बारिश न हो (*होगी, *हो रही है)

ऊपर के वाक्यों में "जाएँ", "चले", "बोलूँ", "आएँ" और "हो" इच्छार्थक रूप हैं। चाहना, इच्छा होना, संभव होना, हो सकना, आदि क्रियाओं के साथ "कि–उपवाक्य" में इन्हीं क्रियारूपों की संगति बैठती है। यहाँ पर "जाएँगे", "जा रहे हैं", "चलती है", आदि क्रिया रूपों का प्रयोग नहीं हो सकता।

इसके विपरीत कुछ अन्य क्रियाओं के साथ इस प्रकार का कोई बंधन नहीं है, जैसे "मालूम होना", "जानना", "कहना", "बताना", आदि, जैसे:

47) मैं जानता हूँ वह क्यों आया/आ रहा है/आता है।

48) उसने कहा कि मैं कल आया था आऊँगा/आ सकता हूँ।

आपने इस इकाई में मिश्रवाक्य की संरचना और मिश्रवाक्य के तीन प्रकारों में से एक प्रकार– 'संज्ञा उपवाक्य"–के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके दो अन्य प्रकार–विशेषण उपवाक्य और क्रियाविशेषण उपवाक्य के संबंध में आप अगली इकाई 15 में पढ़ेंगे।

अभ्यास 2

क) कोष्ठक में दिए विकल्पों में से सही शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1) जो उपवाक्य वाक्य में ..... का काम करते हैं उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं
(विशेषण/क्रियाविशेषण/संज्ञा)

2) संज्ञा उपवाक्य से पूर्व सामान्यतः ..... समुच्चयबोधक अव्यय का प्रयोग होता है।
(और, कि, लेकिन)

3) उपवाक्य से संज्ञापद में रूपांतरित होने की प्रक्रिया को ..... कहते हैं।
(पूरक/रूपांतरण/नामिकीकरण/कृदंत)

4) "वे चाहते हैं कि हम भी उनके काम में कुछ योगदान दें" वाक्य में दूसरा उपवाक्य ..... के रूप में प्रयुक्त है।
(कर्त्ता, कर्म, पूरक)

5) "यह सत्य है कि मैंने ही उसे ऐसा करने को कहा था" वाक्य में दूसरा उपवाक्य ..... का पूरक है।
(सत्य, यह, है)

ख) निम्नलिखित वाक्यों को नमूने के अनुसार मिश्रवाक्यों में रूपांतरित कीजिए:

नमूना : डॉक्टर ने मुझे दो-तीन दिन आराम करने को कहा है।
डाक्टर ने मुझे कहा है कि मैं दो-तीन दिन आराम करूँ।

1) बड़े बाबू ने मुझे चार बजे तक लौट आने को कहा है।

2) मेरा विचार आज ही लौट जाने का है।

3) शीला भी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहती है।

4) मेरा मन कुछ दिन यहीं रहने को कर रहा है।

5) उनकी इच्छा बड़े बेटे के साथ रहने की है।

ग) निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा उपवाक्यों को पहचान कर अलग से लिखें:

1) तुम्हारा यह कथन कि मैंने जानबूझकर उसे जाने दिया, गलत है।

2) मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ वह अब भी उसी पद पर काम कर रहा है।

3) आप इतने बड़े आदमी बन गए हैं, कौन नहीं जानता?

4) मेरा यह कहना कि तुम बीच में दगा दे जाओगे, गलत नहीं निकला।

6) हो सकता है वह अब न आए।

घ) निम्नलिखित प्रकार के मिश्रवाक्यों के 3-3 वाक्य अपनी ओर से लिखिए:

क) मिश्र वाक्य जिनमें कि उपवाक्य का प्रयोग हो।

.....

.....

.....

ख) मिश्र वाक्य जिनमें संज्ञा उपवाक्य में 'कि'' का लोप हो।

.....

.....

.....

ग) मिश्र वाक्य जिनमें चाहना-वर्ग की क्रियाओं वाले मुख्य उपवाक्य हों।

.....

.....

.....

च) इसी इकाई से पाँच ऐसे मिश्रवाक्य छाँटिए जिनमें विशेषण उपवाक्यों का प्रयोग हो।

.....

.....

.....

.....

.....

छ) अपनी ओर से तीन ऐसे वाक्य बनाइए जिनमें मिश्रवाक्य तथा संयुक्त वाक्य दोनों का समावेश हो।

.....

.....

.....

ज) अपनी ओर से पाँच ऐसे वाक्य बनाइए जिनमें एक सरल वाक्य, एक संज्ञा उपवाक्य और एक विशेषण उपवाक्य का प्रयोग हो।

.....

.....

.....

.....

.....

14.5 सारांश

आपने इस इकाई में मिश्र वाक्य की संरचना और मिश्र वाक्य के तीन प्रकारों में से एक प्रकार–"संज्ञा उपवाक्य" की संरचना और विशेषताओं के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त की। आपने पढ़ा कि–

- मिश्रवाक्य में एक मुख्य (स्वतंत्र) उपवाक्य और एक या अधिक गौण (आश्रित) उपवाक्य होते हैं।
- इन दोनों उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।
- मुख्य उपवाक्य अर्थ के लिए किसी अन्य उपवाक्य पर आश्रित नहीं होता, लेकिन गौण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर आश्रित होता है।
- ण उपवाक्य कुछ सीमाओं के अंतर्गत वाक्य के प्रारंभ, मध्य और अंत में प्रयुक्त हो सकते हैं।
- मिश्र वाक्य के तीन प्रकार होते हैं–संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रिया विशेषण उपवाक्य।
- संज्ञा उपवाक्य, वाक्य में कर्ता और कर्म दोनों भूमिकाओं में प्रयुक्त हो सकते हैं।
- संज्ञा उपवाक्य "यह", "ऐसा" तथा कुछ अन्य शब्दों के पूरक के रूप में भी प्रयुक्त हो सकते हैं।
- संज्ञा उपवाक्य की अपेक्षा करने वाली क्रियाओं की संख्या सीमित है।
- संभावनार्थक तथा इच्छार्थक क्रियाओं (चाहना वर्ग) के बाद प्रयुक्त संज्ञा उपवाक्यों की क्रियाओं के रूप भी इच्छार्थक होते हैं।
- संज्ञा उपवाक्यों से पूर्व सामान्यत: "कि" शब्द का प्रयोग होता है जिसका कभी-कभी ऐच्छिक अथवा अनिवार्य लोप हो जाता है।
- कुछ संज्ञा उपवाक्यों को संज्ञा पदों में रूपांतरित करके मुख्य उपवाक्य में समाहित किया जा सकता है।

14.6 शब्दावली

इस पाठ में आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली:

संज्ञा उपवाक्य	रूपांतरण
विशेषण उपवाक्य	चाहना-वर्ग
क्रियाविशेषण उपवाक्य	संभावना-वर्ग
संयुक्त वाक्य	इच्छार्थक
मिश्रवाक्य	गौण उपवाक्य
सरल वाक्य	मुख्य/स्वतंत्र उपवाक्य
पद	कर्ता
पदबंध	कर्म
संज्ञापद	आश्रित उपवाक्य
पूरक	
सर्वनाम	विकल्प
भाववाचक संज्ञा	एवं संकेतक
कृदंत	कार्य-व्यापार
कि-उपवाक्य	प्रतिबंध
पूरक उपवाक्य	संगति
नामिकीकरण	समुच्चयबोधक अव्यय

14.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) *हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण*, प्रो. सूरजभान सिंह: 1985 साहित्य सहकार, दिल्ली।

2) *हिंदी भाषा की वाक्य संरचना*, डॉ. भोलानाथ तिवारी : 1986 साहित्य सहकार, दिल्ली।

14.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) 1) संयुक्त 2) गौण 3) समुच्चयबोधक अव्यय
4) क्रिया विशेषण 5) मुख्य

ख) 1) गलत 2) सही 3) गलत
4) गलत 5) सही

ग) 1) संयुक्त 2) मिश्र 3) मिश्र
4) मिश्र 5) संयुक्त

अभ्यास 2

क) 1) संज्ञा 2) कि 3) नामिकीकरण
4) कर्म 5) यह

ख) 1) बड़े बाबू ने कहा है कि मैं चार बजे तक लौट जाऊँ।
2) मेरा विचार है कि मैं आज ही लौट जाऊँ।
3) शीला चाहती है कि वह भी इस प्रतियोगिता में भाग ले।
4) मेरा मन कर रहा है कि मैं कुछ दिन और यहाँ रहूँ।
5) उनकी इच्छा है कि बड़े बेटे के साथ रहें।

ग) 1) मैंने जानबूझ कर उसे जाने दिया।
2) वह अब भी उसी पद पर काम कर रहा है।
3) आप इतने बड़े आदमी बन गए हैं।
4) कि तुम बीच में दगा दे जाओगे।
5) वह अब न आए।

घ) से इकाई से स्वयं जाँच करें।
ज)

इकाई 15 मिश्र वाक्य 2

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 विशेषण उपवाक्य
  15.2.1 विशेषण उपवाक्य की संरचना
  15.2.2 संबंधवाचक सर्वनाम 'जो'
  15.2.3 विशेषण उपवाक्य के प्रकार
15.3 क्रियाविशेषण उपवाक्य
  15.3.1 क्रियाविशेषण उपवाक्य की संरचना
  15.3.2 क्रियाविशेषण उपवाक्य के प्रकार
15.4 सारांश
15.5 शब्दावली
15.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें
15.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

आप हिंदी संरचना खंड की 15वीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इससे पहले वाली इकाई में आप मिश्र वाक्य-1 के अंतर्गत संज्ञा उपवाक्य के बारे में पढ़ चुके हैं। इस इकाई में हम आपको मिश्र वाक्य 2 के अंतर्गत विशेषण उपवाक्यों और क्रियाविशेषण उपवाक्यों का परिचय दे रहे हैं।

इस इकाई को पढ़कर आप :

- विशेषण उपवाक्य की संरचना को समझा सकेंगे,
- वर्णनात्मक और निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्यों के बीच अंतर बता सकेंगे,
- संबंधवाचक सर्वनाम 'जो' के विभिन्न विकारी रूपों को समझा सकेंगे,
- क्रियाविशेषण उपवाक्य की संरचना को समझा सकेंगे,
- विभिन्न प्रकार के क्रियाविशेषण उपवाक्यों के बीच अंतर बता सकेंगे,
- विशेषण उपवाक्य और क्रियाविशेषण उपवाक्यों के बीच अंतर बता सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

आप पिछली इकाई 14 में पढ़ चुके हैं कि मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और एक या अधिक गौण उपवाक्य होते हैं, जैसे :

1) [मैं जानता था] [कि] [आप नहीं आएँगे।]
2) [मेरे पास एक घड़ी है] [जो] [बैटरी से चलती है।]
3) [मैं कल कॉलेज नहीं आ सकता] [क्योंकि] [मैं बीमार हूँ।]

आप यह भी पढ़ चुके हैं कि इन तीनों वाक्यों का पहला उपवाक्य मुख्य उपवाक्य कहलाता है क्योंकि इससे अर्थ का जो बोध होता है वह अपने में स्वतंत्र है। दूसरे शब्दों में, यह अपने अर्थ की पूर्ति के लिए दूसरे उपवाक्य पर आश्रित नहीं है, इसीलिए इसे स्वतंत्र

उपवाक्य भी कहते हैं। इन तीनों वाक्यों का दूसरा उपवाक्य *गौण* उपवाक्य कहलाता है क्योंकि यह अपने अर्थ की पूर्ति के लिए मुख्य उपवाक्य पर आश्रित रहता है। इसीलिए इसे *आश्रित उपवाक्य* भी कहते हैं। उदाहरण के लिए, वाक्य (1) में "कि आप नहीं आएँगे" का अर्थ तब तक अपूर्ण रहेगा जब तक इससे पूर्व "मैं जानता था" उपवाक्य न जोड़ा जाए, जो एक मुख्य उपवाक्य है। अतः *हर गौण उपवाक्य हमेशा एक मुख्य उपवाक्य की अपेक्षा करता है।*

आप यह भी पढ़ चुके हैं कि वाक्य (1) की कोटि के गौण उपवाक्य को *संज्ञा उपवाक्य* कहते हैं, वाक्य (2) की कोटि के गौण उपवाक्य को *विशेषण उपवाक्य* कहते हैं और वाक्य (3) की कोटि के गौण उपवाक्य को *क्रियाविशेषण उपवाक्य* कहते हैं।

जब हम विभिन्न प्रकार के मिश्र वाक्यों के बीच भेद करते हैं तो वास्तव में इन्हीं गौण उपवाक्यों के स्वरूप को आधार मानते हैं। मिश्रवाक्यों के प्रकारों को गौण उपवाक्यों के शुरू में प्रयुक्त समुच्चयबोधक शब्दों के जरिए भी पहचाना जा सकता है, जैसे "कि" "जो", "क्योंकि", "जहाँ" आदि।

ऊपर बताए गए तीन प्रकार के गौण उपवाक्यों में से संज्ञा उपवाक्यों के बारे में आप इससे पहले की इकाई 14 में विस्तार से पढ़ चुके हैं। इस इकाई में हम आपको विशेषण उपवाक्य (वाक्य 2) और क्रियाविशेषण उपवाक्य (वाक्य 3) के बारे में विस्तार से बताएँगे।

15.2 विशेषण उपवाक्य

15.2.1 विशेषण उपवाक्य की संरचना

पिछली इकाई में संज्ञा उपवाक्य के बारे में हमने बताया था कि वाक्य में इसकी भूमिका वैसी ही होती है जैसे संज्ञा की। केवल अंतर यह है कि *संज्ञा एक शब्द या पद के रूप में व्यक्त होता है जबकि संज्ञा-उपवाक्य एक उपवाक्य में रूप में व्यक्त होता है।* हमने आपको यह भी बताया था कि संज्ञा उपवाक्य से पहले अक्सर समुच्चयबोधक शब्द "कि" का प्रयोग होता है (जिसका कभी-कभी वाक्य में लोप [illegible] ता है, जैसे:

1) मैं जानता था *(कि)* आप नहीं आएँगे।

इसी प्रकार विशेषण उपवाक्य के बारे में भी हम कह सकते हैं कि *यह मुख्य उपवाक्य में प्रयुक्त किसी संज्ञा की विशेषता बताता है या उसकी व्याप्ति या फैलाव को सीमित करता है।* दूसरे शब्दों में, विशेषण-उपवाक्य मिश्र वाक्य में वही कार्य करता है जो सरल वाक्य में विशेषण करता है। केवल अंतर यह है कि *विशेषण अक्सर एक शब्द या पद के रूप में संज्ञा से पहले प्रयुक्त होता है जबकि विशेषण-उपवाक्य वाक्य में एक उपवाक्य के रूप में प्रयुक्त होता है।* इस उपवाक्य के प्रारंभ में "जो" या इसके किसी रूप का प्रयोग होता है। देखिए:

2) क) मेरे पास *बैटरी से चलने वाली* एक घड़ी है। (विशेषण पद)
   ख) मेरे पास एक घड़ी है *जो बैटरी से चलती है।* (विशेषण उपवाक्य)

4) क) मेरे घर के पास एक *सौ साल पुराना* मंदिर है। (विशेषण पद)
   ख) मेरे घर के पास एक मंदिर है *जो सौ साल पुराना है।* (विशेषण उपवाक्य)

5) क) बाहर एक *नीली आँखों वाली* लड़की खड़ी है। (विशेषण पद)
   ख) बाहर एक लड़की खडी है *जिसकी आँखें नीली हैं।* (विशेषण उपवाक्य)

6) क) मैंने *पिछले साल खरीदी* गाड़ी बेच दी। (विशेषण पद)
   ख) मैंने *वह* गाड़ी बेच दी *जो पिछले साल खरीदी थी।* (विशेषण उपवाक्य)

इन सभी वाक्यों में विशेषण तथा विशेषण-उपवाक्य दोनों मुख्य उपवाक्यों की संज्ञाओं (क्रमशः "घड़ी", "मंदिर", "लड़की" "गाड़ी") की विशेषता बताते हैं या उनकी व्याप्ति (फैलाव) को सीमित या मर्यादित करते हैं।

संज्ञा और विशेषण उपवाक्य के बीच के इस संबंध को हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं:

2) मेरे पास एक घड़ी है जो बैटरी से चलती है।

4) मेरे घर के पास एक मंदिर है जो सौ साल पुराना है।

5) बाहर एक लड़की खड़ी है जिसकी आँखें नीली हैं।

6) मैंने वह गाड़ी बेच दी जो पिछले साल खरीदी थी।

अगर आप इन वाक्यों को ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि जहाँ वाक्य (2, 4, 5) में विशेषण उपवाक्य संज्ञा (घड़ी, मंदिर, लड़की) की विशेषता या गुण का वर्णन कर रहे हैं, वहाँ वाक्य (6) में विशेषण उपवाक्य "गाड़ी" की विशेषता नहीं बता रहा है बल्कि उसकी व्याप्ति या फैलाव को सीमित कर रहा है। विशेषण उपवाक्य यहाँ "गाड़ी" के बोध को बहुत-सी गाड़ियों में से केवल उस खास गाड़ी तक सीमित कर रहा है जो पिछले साल खरीदी गई थी।

इस प्रकार अगर आप वाक्य में विशेषण उपवाक्य की भूमिका देखें तो पता चलेगा कि यह संज्ञा के संबंध में कई तरह की सूचना देता है, जैसे: संज्ञा की रूपगत विशेषता बताना, उसके कार्य के बारे में बताना, जाति के बहुत-से सदस्यों में से किसी एक का निर्देश या संकेत देना, विशिष्टता का बोध कराना, संज्ञा की व्याप्ति या फैलाव को सीमित करना, संज्ञा के संबंध में अतिरिक्त सूचना देना, आदि। देखिए:

5) बाहर एक लड़की खड़ी है, जिसकी आँखें नीली हैं। (रूप वर्णन)

7) जो आदमी चिट्ठी बाँटता है उसे डाकिया कहते हैं। (प्रकार्य वर्णन)

6) मैंने वह गाड़ी बेच दी जो पिछले साल खरीदी थी। (विशिष्टता का बोध)

8) जिस होटल में मैं ठहरा था वह बहुत महँगा था। (विशिष्टता का बोध)

9) मेरा एक दोस्त है जो आपके मैनेजर को जानता है। (अतिरिक्त सूचना)

10) बीरबल के कई किस्से मशहूर हैं, जिनका उल्लेख यहाँ ज़रूरी नहीं। (अतिरिक्त सूचना)

ध्यान रहे कि जब भी हम "संज्ञा" की विशेषता की बात करते हैं तो उसमें सर्वनाम भी शामिल है, क्योंकि सर्वनाम तो संज्ञा के स्थान पर ही प्रयुक्त होता है। देखिए:

11) मैं वह नहीं हूँ जिसे आप ढूँढ़ रहे हैं। ("मैं" सर्वनाम)

12) इस शहर में ऐसा कौन है जो आपको नहीं जानता? ("कौन" सर्वनाम)

15.2.2 संबंधवाचक सर्वनाम 'जो'

विशेषण उपवाक्य की एक संरचनागत पहचान यह है कि इसके प्रारंभ में अकसर संबंधवाचक सर्वनाम "जो" का प्रयोग होता है। जब इस शब्द के बाद किसी परसर्ग (ने, का, में, से, को, पर, के लिए आदि) का प्रयोग होता है तो इसका रूप थोड़ा-सा बदल जाता है। तब अकसर यह एकवचन में "जिस" और बहुवचन में "जिन" में बदल जाता है और तभी इनके बाद ऊपर बताए परसर्गों का प्रयोग होता है। इसे विकारी रूप कहते हैं। इन विकारी रूपों के कुछ उदाहरण देखिए:

एकवचन	बहुवचन
जो	जो
जिस-	जिन-
जिसने	जिन्होंने
जिसका	जिनका
जिसमें	जिनमें
जिससे	जिनसे
जिसे/जिसको	जिन्हें/जिनको
जिस पर	जिन पर
जिसके लिए	जिनके लिए

ध्यान रहे कि "जो", "जिस" तथा "जिन" के बाद संज्ञा का प्रयोग भी हो सकता है। उस स्थिति में परसर्ग का प्रयोग संज्ञा के बाद होता है, जैसे:

जो महिला	जो महिलाएँ
जिस स्त्री ने	जिन स्त्रियों ने
जिस सड़क पर	जिन सड़कों पर
जिस घर में	जिन घरों में
जिस लड़के ने	जिन लड़कों ने

कई वाक्यों में संबंधवाचक सर्वनाम "जो" अकेले नहीं, बल्कि जोड़े में आते हैं। इस जोड़े का दूसरा घटक मुख्य उपवाक्य में होता है, जैसे "वह", "वे", "ऐसा", "एक", "कोई" आदि। देखिए:

मुख्य उपवाक्य में	**विशेषण उपवाक्य में**
एक ..... जो (जिस-, जिन-)	(एक लड़का ..... जो)
कोई ..... जो	(कोई लड़का ..... जो)
कुछ ..... जो	(कुछ लड़कियाँ ..... जो)
हर ..... जो	(हर आदमी ..... जो)
वह ..... जो	(वह महिला ..... जो)
वे ..... जो	(वे लोग ..... जो)

उदाहरण देखिए :

13) पैसे *उसी* से माँगो *जिसे* तुमने उधार दिए थे।

14) *ऐसा* काम करो *जिसमें* कुछ फ़ायदा हो।

15) *जिस* आदमी को तुम नहीं पहचानते *उसे* तुम कैसे ढूँढ़ सकते हो?

16) वह लड़का तो चला गया *जिसके* लिए तुम मकान ढूँढ़ रहे थे।

17) *जिन* लोगों ने तुम्हें यह सलाह दी वे अब मुकर रहे हैं।

18) मुझे *ऐसी* पत्नी चाहिए *जो* सरकारी नौकरी करती हो।

19) हमारा *एक* पड़ोसी है *जो* बिल्कुल आपकी तरह है।

20) इन बच्चों को कुछ किताबें चाहिए *जो* रोचक और सस्ती हों।

स्थान क्रम : अभी तक आपने विशेषण उपवाक्य के जितने उदाहरण देखे उनमें वे अधिकतर वाक्य के अंतिम उपवाक्य के रूप में आए, पर हमेशा ऐसा हो—यह ज़रूरी नहीं है। हिंदी में कुछ विशेषण उपवाक्य वाक्य के प्रारंभ, मध्य और अंत—तीनों स्थानों पर आ सकते हैं और कुछ केवल मध्य और अंत में। (अंग्रेज़ी में विशेषण उपवाक्य केवल वाक्य के मध्य या अंत में ही आ सकते हैं, प्रारंभ में नहीं)। ये तीनों स्थितियाँ इस प्रकार दर्शाई जा सकती हैं:

1) मुख्य वाक्य + विशेषण उपवाक्य

2) विशेषण उपवाक्य + मुख्य उपवाक्य

3) अधूरा मुख्य उपवाक्य + विशेषण उपवाक्य + शेष मुख्य उपवाक्य

उदाहरण देखिए:

21) क) वे सब किताबें बिक गईं *जो आपने मुझे दी थीं।* (अंत में)

ख) *जो किताबें आपने मुझे दी थीं* वे सब बिक गईं। (प्रारंभ में)

ग) वे सब किताबें, *जो आपने मुझे दी थीं*, बिक गईं। (मध्य में)

नीचे दिए वाक्य में विशेषण उपवाक्य केवल दो ही स्थानों पर आ सकता है—मध्य और अंत में। यह प्रारंभ में नहीं आ सकता। देखिए:

5) क) बाहर एक लड़की, *जिसकी आँखें नीली हैं*, खड़ी है। (मध्य में)

ख) बाहर एक लड़की खड़ी है, *जिसकी आँखें नीली हैं।* (अंत में)

ग) * *जिसकी आँखें नीली हैं*, बाहर एक लड़की खड़ी है। (अशुद्ध)

15.2.3 विशेषण उपवाक्य के प्रकार

ऊपर आपने देखा कि कुछ वाक्यों में विशेषण उपवाक्यों की भूमिकाएँ कुछ भिन्नता लिए हुए होती हैं। गौर से देखने पर उनकी संरचना में भी आपको थोड़ा-बहुत अंतर मिलेगा। इस अधार पर मोटे रूप से विशेषण उपवाक्यों के दो भेद किये जाते हैं:

क) *वर्णनात्मक* विशेषण उपवाक्य, जिनमें संज्ञा के रूप, गुण या प्रकार्य का सामान्य वर्णन होता है।

ख) *निर्देशात्मक* विशेषण उपवाक्य, जिनमें संज्ञा की व्याप्ति या फैलाव को सीमित या निर्दिष्ट करने का बोध होता है।

नीचे के वाक्य देखिए:

2) मेरे पास एक घड़ी है *जो बैटरी से चलती है।*

21) वे सब किताबें बिक गईं *जो आपने मुझे दी थीं।*

वाक्य (2) में घड़ी की इस विशेषता का वर्णन है कि वह बैटरी से चलती है। यह *वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य* है। दूसरे वाक्य (21) में बहुत-सी किताबों में से केवल उन विशिष्ट किताबों तक संज्ञा की व्याप्ति या फैलाव को सीमित किया गया है जो मुझे दी गई थीं। यहाँ "पुस्तकें" विशिष्ट या निर्दिष्ट हैं—सभी पुस्तकें नहीं, केवल कुछ खास कोटि की पुस्तकें ही। यह विशेषण उपवाक्य *निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य* कहलाता है, क्योंकि यह एक प्रकार का संकेत या निर्देश देता है।

इन दो प्रकार के विशेषण उपवाक्यों में कुछ खास अंतर महत्वपूर्ण है:

क) निर्धारित शब्द वह/वे आदि

मुख्य उपवाक्य की जिन संज्ञाओं की विशेषता निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य बनाते हैं उनके साथ किसी निर्धारक शब्द (वह/वे) का प्रयोग होता है। सामान्य वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की जिन संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं, उनके साथ सामान्यत: "एक", "कोई", "कुछ", "ऐसा" आदि का प्रयोग होता है या फिर इनमें से किसी का प्रयोग नहीं होता। इन्हें इस प्रकार दर्शाया जा सकता है:

वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य	**निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य**
ϕ	वह (उस-)
एक	वे (उन-)
कोई	
हर	
कुछ	
ऐसा	

वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य के उदाहरण देखिए:

22) यह *एक* राज़ है जो मैं किसी को नहीं बता सकता। (एक)

4) मेरे घर के पास *एक* मंदिर है जो सौ साल पुराना है। (एक)

23) यहाँ *हर* आदमी एक पहेली है *जिसे* समझना बड़ा मुश्किल है। (हर)

24) *कुछ* लोग स्वाभिमानी होते हैं जो किसी का एहसान लेना नहीं पसंद करते। (कुछ)

25) बाहर *कोई* लड़का खड़ा है जो आपसे मिलना चाहता है। (कोई)

18) मुझे *ऐसी* पत्नी चाहिए जो सरकारी नौकरी करती हो। (ऐसी)

26) दया धर्म है *जिसके* सामने शक्ति भी कुंठित हो जाती है। (*ϕ*)

निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य के उदाहरण देखिए:

27) *वह* लड़की कौन है जो आपको घूर रही है। (वह)

28) यह *उन* लोगों की सूची है *जिनसे* तुम्हें पैसे लेने हैं। (उन)

6) मैंने वह गाड़ी बेच दी जो पिछले साल खरीदी थी। (वह)

29) ये ही वे लड़कियाँ हैं जिनका मैंने कल ज़िक्र किया था। (वे)

21) वे सब किताबें बिक गईं जो आपने मुझे दी थीं। (वे)

दोनों प्रकार के विशेषण उपवाक्यों के बीच इस बारीक अंतर पर ध्यान दीजिए:

5) क) बाहर एक लड़की खड़ी है जिसकी आँखें नीली हैं। (वर्णनात्मक)

ख) बाहर वह लड़की खड़ी है जिसकी आँखें नीली हैं। (निर्देशात्मक)

ख) स्थानक्रम

निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य वाक्य के प्रारंभ, मध्य और अंत तीनों स्थानों पर प्रयुक्त हो सकते हैं, लेकिन वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य वाक्य के मध्य या अंत में ही प्रयुक्त हो सकते हैं। देखिए निर्देशात्मक उपवाक्य:

21) क) जो किताबें आपने मुझे दी थीं वे सब बिक गईं। (प्रारंभ)

ख) वे सब किताबें बिक गईं जो आपने मुझे दी थीं। (अंत)

ग) वे सब किताबें, जो आपने मुझे दी थीं, बिक गईं। (मध्य)

देखिए वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य :

4) क) मेरे घर के पास एक मंदिर है जो 100 साल पुराना है। (अंत)

ख) * जो सौ साल पुराना है, मेरे घर के पास एक मंदिर है। (अशुद्ध)

9) क) मेरा एक दोस्त है जो आपके मैनेजर को जानता है। (अंत)

ख) * जो आपके मैनेजर को जानता है, मेरा एक दोस्त है। (अशुद्ध)

ग) जो + संज्ञा

निर्देशात्मक उपवाक्य में "वह" तथा 'जो" दोनों के साथ सज्ञा का प्रयोग किया जा सकता है, वर्णनात्मक उपवाक्य में नहीं। देखिए:

21) वे सब किताबें बिक गईं जो किताबें आपने मुझे दी थीं। (निर्देशात्मक)

5) क) बाहर वह लड़की खड़ी है जिस लड़की की आँखें नीली हैं। (निर्देशात्मक)

ख) * बाहर एक लड़की खड़ी है जिस लड़की की आँखें नीली हैं। (अशुद्ध, वर्णनात्मक)

इस प्रकार आप पाएँगे कि यद्यपि निर्देशात्मक और वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य ऊपर से देखने में समान हैं लेकिन इनके प्रयोग तथा अर्थबोध में काफ़ी अंतर है।

अभ्यास 1

क) नीचे लिखे वाक्यों में दिए गए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए:

1) संज्ञा उपवाक्य का प्रारंभ समुच्चयबोधक शब्द ..... से होता है। (जो, कि, जहाँ)

2) विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के ..... की विशेषता बताता है। (क्रियाविशेषण, क्रियापद, संज्ञापद)

3) ..... विशेषण उपवाक्य वाक्य के प्रारंभ में प्रयुक्त होने की क्षमता रखते हैं। (वर्णनात्मक, निर्देशात्मक दोनों प्रकार के)

4) "जिस घर से" में "जिस" शब्द "जो" का ..... रूप है। (विकल्प, संज्ञा, सर्वनाम)

5) हर गौण उपवाक्य को एक ..... की आवश्यकता पड़ती है। (विशेषण उपवाक्य, मुख्य उपवाक्य, संज्ञा उपवाक्य)

ख) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। बताइए कौन-से वाक्य सही हैं, कौन से गलत:

1) विशेषण उपवाक्य केवल संज्ञा की विशेषता बताता है, सर्वनाम की नहीं। सही ☐ गलत ☐

2) विशेषण उपवाक्य वाक्य के अंत में ही प्रयुक्त होते हैं, प्रारंभ या मध्य में नहीं। सही ☐ गलत ☐

3) निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य संज्ञा की व्याप्ति को सीमित करता है। सही ☐ गलत ☐

4) मुख्य वाक्य की जिन संज्ञाओं की विशेषता निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य बताता है उनके साथ निर्धारक शब्द ''वह/वे'' का प्रयोग संभव है। सही ☐ गलत ☐

5) वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य से संज्ञा में विशिष्टता का बोध होता है। सही ☐ गलत ☐

ग) नीचे दिए वाक्यों में तीन प्रकार के उपवाक्य हैं:

1) वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य

2) निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य

3) संज्ञा उपवाक्य

हर वाक्य के सामने सही उपवाक्य की संख्या भरिए:

1) भगवान उसकी मदद करता है जो अपनी मदद खुद करता है। .....

2) कुछ छात्र ऐसे होते हैं जो एक भी उत्तर-पत्र पूरा नहीं करते। .....

3) वह कमीज़ फट गई जो आप बनारस से लाए थे। .....

4) ज्योतिषी कहता है कि मैं बहुत बड़ा आदमी बनूँगा। .....

5) एक राजा था जो बहुत दयालु था। .....

6) जिस मरीज़ को आपने देखा था वह ठीक हो गया है। .....

7) मुझे कोई नौकर चाहिए जो खाना बनाना भी जानता हो। .....

8) मैं जानता हूँ तुम किसे ढूँढ़ रहे हो। .....

1 क्रियाविशेषण उपवाक्य

15.3.1 क्रियाविशेषण उपवाक्य की संरचना

जिस प्रकार विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के किसी संज्ञापद की विशेषता बताता है, उसी तरह क्रियाविशेषण उपवाक्य सामान्यतः मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है। क्रिया की विशेषता बताने से तात्पर्य यह है कि यह कार्य-व्यापार के घटित होने के समय, स्थान, रीति, परिमाण, कारण आदि से संबंधित सूचना देता है। उदाहरण के लिए, नीचे के वाक्य देखिए:

1) जब मैं स्कूल में पढ़ता था तब आप मुझे गणित पढ़ाते थे। (समय)

2) जहाँ गुप्ताजी रहते हैं वहाँ एक सरकारी अस्पताल भी है। (स्थान)

3) जैसा लता गाती है वैसा और गायिकाएँ नहीं गा सकतीं। (रीति)

इन वाक्यों में "जब", "जहाँ", और "जैसा" से शुरू होने वाले उपवाक्य क्रियाविशेषण उपवाक्य हैं और क्रमशः पढ़ाने, स्थित होने और गाने के कार्य-व्यापार के समय, स्थान और रीति की सूचना दे रहे हैं।

क्रिया विशेषण के बारे में आप पढ़ चुके हैं कि *क्रियाविशेषण केवल क्रिया की ही विशेषता नहीं बताता, बल्कि विशेषण और स्वयं क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता है,* जैसे:

4) गाड़ी धीरे चल रही है। (क्रिया की विशेषता)

5) गाड़ी बहुत धीरे चल रही है। (क्रियाविशेषण "धीरे" की विशेषता)

6) गाड़ी बहुत पुरानी है। (विशेषण "पुरानी" की विशेषता)

इसी प्रकार क्रियाविशेषण उपवाक्य के संबंध में भी हम कह सकते हैं कि यह मुख्य उपवाक्य की क्रिया के साथ-साथ उसके किसी विशेषण और क्रियाविशेषण की भी विशेषता बता सकता है, जैसे:

7) शीला इतनी कमज़ोर हो गई है कि वह बिस्तर से भी नहीं उठ सकती। (विशेषण "कमज़ोर" की विशेषता)

8) गाड़ी ऐसे धीरे चल रही है जैसे बैलगाड़ी हो। (क्रियाविशेषण "धीरे" की विशेषता)

ऊपर के वाक्यों (1-3, 7-8) में "जब", "जहाँ", "जैसा", "कि" और "जैसे" से शुरू होने वाले उपवाक्य गौण उपवाक्य हैं और शेष मुख्य उपवाक्य। देखिए:

गौण उपवाक्य (क्रियाविशेषण उपवाक्य)	**मुख्य उपवाक्य**
जब मैं स्कूल में पढ़ता था	तब आप मुझे गणित पढ़ाते थे।
जहाँ गुप्ता जी रहते हैं	वहाँ एक सरकारी अस्पताल भी है।
जैसा लता गाती है	वैसा और गायिकाएँ नहीं गा सकतीं।
कि वह बिस्तर से नहीं उठ सकती	शीला इतनी कमज़ोर हो गई है।
जैसे बैलगाड़ी हो	गाड़ी ऐसे धीरे चल रही है।

ऊपर के वाक्यों से क्रियाविशेषण उपवाक्यों की दो और विशेषताओं का पता चलेगा। पहला तो यह कि क्रियाविशेषण उपवाक्य वाक्य के प्रारंभ में ही आएँ यह ज़रूरी नहीं। कई क्रियाविशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के बाद भी आते हैं, जैसे वाक्य (7-8) में।

दूसरे, सभी गौण उपवाक्यों के प्रारंभ में, "जब", "जहाँ", "जैसा", "कि", "जैसे" आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है और सभी मुख्य उपवाक्यों में क्रमशः "तो", "वहाँ", "वैसा", "इतनी", "ऐसे" आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। अतः ये सभी शब्द अकेले नहीं, बल्कि जोड़े के रूप में आते हैं, जिनमें से एक घटक गौण उपवाक्य के शुरू में प्रयुक्त होता है और दूसरा मुख्य उपवाक्य में, जैसे "जब.....तब/तो' "जहाँ....वहाँ" "जैसा....वैसा", "इतना....कि", "ऐसे....जैसे"। इस प्रकार के सभी शब्दों को हमने समुच्चयबोधक शब्द कहा है, लेकिन इनमें से जो शब्द क्रियाविशेषण उपवाक्य के प्रारंभ में प्रयुक्त होते हैं उन्हें **संबंधवाचक क्रियाविशेषण** भी कहते हैं जैसे, "जब", "जहाँ", "जैसा", "जैसे" आदि। इसी प्रकार इनमें से जो शब्द मुख्य उपवाक्य में जुड़ते हैं उन्हें **नित्यसंबंधी शब्द** कहते हैं, जैसे "तब", "तो", "वहाँ", "वैसा", "कि" आदि।

इन दोनों घटकों में से क्रियाविशेषण उपवाक्य में प्रयुक्त होने वाले संबंधवाचक शब्द (जब, जहाँ, जैसा, जैसे, कि आदि) सामान्यतः अनिवार्य हैं जबकि मुख्य उपवाक्य में प्रयुक्त होने वाले कुछ नित्यसंबंधी शब्दों (तब, तो, वहाँ, वैसा, वैसे) का कभी-कभी ऐच्छिक लोप भी हो जाता है, जैसे:

1) जब मैं स्कूल में पढ़ता था, (तब) आप मुझे गणित पढ़ाते थे।

9) जब आप आए, (तो) खाना खत्म हो चुका था।

10) जब भी मैं इस लड़के को देखता हूँ (तो) मुझे अपना बचपन याद आ जाता है।

11) जहाँ भी मैं जाऊँगा, (वहाँ) तुम्हारे गुण गाऊँगा।

3) जैसा लता गाती है, (वैसा) और गायिकाएँ नहीं गा सकतीं।

12) जैसे ही उन्होंने ख़बर सुनी, (वैसी ही) वे रो पड़े।

13) जैसा तुम कहोगे, (वैसा) मैं करूंगा।

15.3.2 क्रियाविशेषण उपवाक्य के प्रकार

क्रियाविशेषण के पाठ में आप क्रियाविशेषण के विभिन्न प्रकारों के बारे में पढ़ चुके हैं, जैसे समयवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक क्रियाविशेषण आदि। क्रियाविशेषण उपवाक्यों के भेद भी सामान्यतः इन्हीं आधारों पर किए जाते हैं। मोटे रूप से क्रियाविशेषण उपवाक्यों के आठ भेद किए जा सकते हैं। जैसा कि आप ऊपर पढ़ चुके हैं, *क्रियाविशेषण उपवाक्य की हर कोटि अपने संबंधवाचक तथा नित्यसंबंधी शब्दों के आधार पर पहचानी जा सकती है।* इसलिए हम सबसे पहले इन संबंधवाचक तथा नित्यसंबंधी शब्दों के साथ क्रियाविशेषण उपवाक्यों के आठ प्रकारों की सूची प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके बाद इनके उदाहरण दिए जाएँगे।

	प्रकार	क्रियाविशेषण उपवाक्य में	मुख्य उपवाक्य में
1.	**समयवाचक**	जब	तब/तो
		जब तक	तब तक
		जब से	तब से
		जब कभी	तब
		जब-जब	तब-तब
		ज्योंही	त्योंही
		जैसे ही	वैसे ही
2.	**स्थानवाचक**	जहाँ	वहाँ/वहीं
		जहाँ तक	वहाँ तक
		जहाँ से	वहाँ से
		जहाँ-जहाँ	वहाँ-वहाँ
		जिधर	उधर
3.	**रीतिवाचक**	जैसा	वैसा
		जैसे	वैसे/ऐसे
		मानों	ऐसे
4.	**परिमाणवाचक**	ज्यों-ज्यों	त्यों-त्यों
		जैसे-जैसे	तैसे-तैसे
		जितना	उतना
		कि	इतना
5.	**कारणवाचक**	क्योंकि	इसलिए/ϕ
		चूंकि	इसलिए
		इसलिए	कि
6.	**शर्तवाचक**	यदि/अगर	तो
7.	**विरोधवाचक**	यद्यपि	तथापि
		हालाँकि	फिर भी
		चाहे	तो भी
8.	**प्रयोजनवाचक**	जिससे/ताकि	–
		कहीं	–

ऊपर बताए गये क्रियाविशेषण उपवाक्यों के प्रकारों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं। कोष्ठक में दिए नित्यसंबंधी शब्दों का ऐच्छिक लोप संभव है:

1. समयवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

इससे घटना या कार्य से संबंधित समय या काल का बोध होता है।

1) जब मैं स्कूल में पढ़ता था (तब/तो) आप मुझे गणित पढ़ाते थे।

14) जब टेलिफ़ोन की घंटी बजी (तो/तब) मैं खाना खा रहा था।

15) जब तक तुम पैसे नहीं दोगे (तब तक) तुम्हारा काम नहीं बनेगा।

16) जब से हमारे घर टी.वी. आया है (तब से) घर की शांति भंग हो गई है।

17) जब कभी इधर से निकलें (तो) हमारे घर ज़रूर आएँ।

18) जब-जब संसार में अन्याय हुआ (तब-तब) भगवान ने अवतार लिया।

19) ज्योंही बारिश रुकी, (त्योंही) हम चल पड़े।

20) जैसे ही मेरा नाम पुकारा गया (वैसे ही) लोग खुशी से उछल पड़े।

2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

इससे घटना या कार्य से संबंधित स्थल का बोध होता है।

2) जहाँ गुप्ताजी रहते हैं वहीं एक सरकारी अस्पताल भी है।

21) जहाँ आप जा रहे हैं वहाँ कोई सिनेमाघर नहीं है।

22) मैं वहाँ नहीं रहता जहाँ आप पिछली बार आए थे।

23) यह वही जगह है जहाँ आप पिछली बार ठहरे थे।

24) जहाँ तक यह बस जाएगी (वहाँ तक) मैं आपको छोड़ सकता हूँ।

25) जहाँ से आप यह साड़ी लाईं वहीं से मैं भी लाई।

26) जहाँ-जहाँ आप जाएँगे (वहाँ-वहाँ) पत्रकार भी पहुँच जाएँगे।

27) जिधर ये लोग जा रहे हैं (उधर ही) तुम भी चले जाओ।

3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

इससे कार्य-व्यापार की रीति या तरीके का बोध होता है।

3) जैसा लता गाती है (वैसा) और गायिकाएँ नहीं गा सकतीं।

28) जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं हो पाता।

29) जैसा सुंदर आपका मकान है वैसा मेरा नहीं।

30) जैसे तुम मुझे चाहते हो वैसे ही वह भी मुझे चाहता है।

31) जैसे आप सरकार के नौकर हैं वैसे मैं भी हूँ।

32) आप तो ऐसे कह रहे हैं मानो इससे आपका कोई संबंध ही नहीं।

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

इससे अधिकता, तुल्यता, न्यूनता तथा अनुपात आदि का बोध होता है।

33) ज्यों-ज्यों परीक्षा पास आ रही है (त्यों-त्यों) मैं 'नरवस' होता जा रहा हूँ।

34) जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती जाती है (वैसे-वैसे) सभी जानवर घने जंगलों की ओर चले जाते हैं।

35) जितना तुम चाहते हो उतना मैं शायद न दे पाऊँ।

7) शीला इतनी कमज़ोर हो गई है कि वह बिस्तर से भी नहीं उठ सकती।

5. कारणवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

इससे घटना या कार्य-कारण भाव का बोध होता है।

36) क्योंकि मैं भी उम्मीदवार हूँ इसलिए मुझे भी इन कागज़ात की जरूरत पड़ेगी।

37) मैं नहीं आ सकता क्योंकि मेरा काम अभी पूरा नहीं हुआ है।

38) चूंकि मेरा नाम भी सूची में है इसलिए मुझे भी तैयार रहना होगा।

39) डॉक्टर ने मरीज़ को इसलिए बुलाया कि वे उसका परीक्षण कर सकें।

40) मैं इसलिए नहीं जा सकता था कि मेरी गाड़ी ख़राब थी।

6. शर्तवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

इससे कार्य या घटना के संबंध में किसी शर्त या अनुबंध का बोध होता है।

41) यदि आप चाहें तो अब भी अपना नाम वापस ले सकते हैं।

42) अगर मेरी बात सच निकली तो आप जो चाहे मुझे सज़ा दे सकते हैं।

43) अगर आपको मनमानी ही करनी थी तो मुझसे क्यों पूछा था?

7. विरोधवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

इसे कुछ विद्वान रियायतवाची क्रियाविशेषण उपवाक्य भी कहते हैं। इससे दो कार्यों पर घटनाओं के बीच विरोधाभास या विरोधी सूचना का बोध होता है।

44) यद्यपि साहब मेरे पुराने दोस्त हैं, (फिर भी) मैं उनका एहसान नहीं लेना चाहता।

45) हालांकि उन्होंने मुझे पूरी छूट दे दी थी, (फिर भी) मैंने बाहर जाना ठीक नहीं समझा।

46) चाहे वे कुछ भी क्यों न कहें, (तो भी) मैं उनका निरादर नहीं कर सकता।

47) चाहे तुम कितने ही बड़े क्यों न हो जाओ (तो भी) रहोगे वही मक्खीचूस।

8. प्रयोजनवाची क्रियाविशेषण उपवाक्य

इससे कार्य या घटना के प्रयोजन का बोध होता है।

48) लेन-देन की बात पहले ही साफ़ कर लो जिससे बाद में गलतफ़हमी न रहे।

49) दरवाज़ा खोल दो ताकि ताज़ी हवा भीतर आए।

50) इसके बाद बरतन का ढक्कन खोल दें जिससे भाप बाहर निकल जाए।

51) जल्दी करो कहीं गाड़ी छूट न जाए।

ऊपर आपने क्रियाविशेषण उपवाक्यों के प्रकार तथा उनके उदाहरण-वाक्य देखे। कभी-कभी कुछ उपवाक्य विशेषण उपवाक्य तथा क्रियाविशेषण उपवाक्य दोनों की भूमिका निभाते हुए देखे जा सकते हैं। देखिए:

52) जिस समय मैं स्कूल में पढ़ता था, उस समय आप मुझे गणित पढ़ाते थे।

53) जिस जगह गुप्ता जी रहते हैं उस जगह एक सरकारी अस्पताल भी है।

54) जितना धन तुम चाहते हो उतना धन मैं शायद न दे पाऊँ।

55) जैसा लड़का तुम चाहते थे वैसा ही लड़का तुम्हें मिल गया।

56) जिस रास्ते तुम जाओगे, उसी रास्ते मैं भी जाऊँगा।

इन वाक्यों के संबंधवाचक शब्दों पर ध्यान दीजिए। "जिन", "जितना", "जैसा" के बाद संज्ञा का प्रयोग हुआ है, इसलिए व्याकरण की दृष्टि से ये शब्द विशेषण सिद्ध होते हैं, लेकिन इनका प्रकार्य या अर्थबोध वाक्य में वही है जो क्रियाविशेषण का है। देखिए:

विशेषण + संज्ञा		**क्रियाविशेषण**
जिस समय	=	जब
जिस जगह	=	जहाँ
जितना धन	=	जितना
जैसा लड़का	=	जैसा
जिस रास्ते	=	जिधर

ऊपर बताए गए दोनों रूपों से लगभग समान अर्थबोध होता है और यह अर्थबोध समय तथा स्थान से जुड़े होने के कारण क्रियाविशेषण के अधिक निकट है, लेकिन व्याकरण की दृष्टि से विशेषण तथा संज्ञा का संयोग होने के कारण वाक्य (52-56) के गौण उपवाक्यों को विशेषण उपवाक्य ही माना जाना चाहिए।

अभी तक हमने विशेषण उपवाक्य तथा क्रियाविशेषण उपवाक्य के जितने उदाहरण दिए हैं उनमें केवल दो ही उपवाक्य वाले वाक्य हैं। ऐसे वाक्य भी संभव हैं जिनमें विशेषण उपवाक्य और क्रियाविशेषण उपवाक्य दोनों मिलकर एक साथ आए हों या एक ही प्रकार के दो या अधिक उपवाक्य एक ही वाक्य में प्रयुक्त हुए हों, जैसे:

57) आपने वह दवा कहाँ रखी जो आपने उस दुकान से खरीदी थी जिसमें रमेश काम करता है।
(मुख्य उपवाक्य + विशेषण उपवाक्य + क्रियाविशेषण उपवाक्य)

58) रामलाल ने वह कार, जो उसका लड़का चला रहा है, तब खरीदी थी जब वह कॉलेज में पढ़ता था।
(मुख्य उपवाक्य + विशेषण उपवाक्य + क्रियाविशेषण उपवाक्य)

59) जहाँ आप रहते हैं वहाँ एक सरकारी अस्पताल है जिसमें अक्सर बहुत भीड़ रहती है।
(क्रियाविशेषण उपवाक्य + मुख्य उपवाक्य + क्रियाविशेषण उपवाक्य)

अभ्यास 2

क) कोष्ठक में दिए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:

1) ..... से शर्तवाचक क्रियाविशेषण का बोध होता है:
(यद्यपि–तथापि, जैसे–वैसे, अगर–तो)

2) ..... उपवाक्य विशेषण की भी विशेषता बताता है।
(संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण)

3) "जब-तब" और "जहाँ-तहाँ" में "तब" और "वहाँ" ..... शब्द कहलाते हैं।
(संबंधवाचक, नित्यसंबंधी, विशेषण)

4) "क्योंकि" तथा "चूंकि" से शुरू होने वाले क्रियाविशेषण उपवाक्य से ..... का बोध होता है।
(रीति, कारण, प्रयोजन)

5) "जिस दिन" में "जिस" का प्रयोग ..... के रूप में हुआ है।
(क्रियाविशेषण, विशेषण, नित्यसंबंधी शब्द)

ख) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। बताइए कौन-से वाक्य सही हैं, कौन-से गलत?

1) क्रियाविशेषण उपवाक्य क्रिया के अलावा क्रियाविशेषण और विशेषण की भी विशेषता बताता है। सही ☐ गलत ☐

2) क्रियाविशेषण उपवाक्य हमेशा वाक्य के प्रारंभ में ही आता है। सही ☐ गलत ☐

3) यह जरूरी नहीं कि सभी क्रियाविशेषण उपवाक्य गौण उपवाक्य हों। सही ☐ गलत ☐

4) क्रियाविशेषण उपवाक्यों में से संबंधवाचक शब्द "जहाँ", "जब", और "जैसे" का ऐच्छिक लोप संभव है। सही ☐ गलत ☐

5) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण से अधिकता, न्यूनता, तुल्यता या अनुपात का बोध होता है। सही ☐ गलत ☐

ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य के आठ प्रकार हैं–समयवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक कार्यकारणवाचक, शर्तवाचक, विरोधवाचक, प्रयोजनवाचक। नीचे दिए क्रियाविशेषण उपवाक्यों के सामने उनके सही प्रकार लिखिए:

1) ज्योंही घंटी बजी, चपरासी फ़ौरन भीतर आया .....

2) सूची में जहाँ-जहाँ मेरा नाम है, वहाँ-वहाँ निशान लगा दें। .....

3) मैं आज बाज़ार नहीं जा पाऊँगा, क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं हैं। .....

4) चूंकि मैं वादा कर चुका हूँ, इसलिए मेरे लिए जाना ज़रूरी है। .....

5) वह इतना कंजूस है कि दिन में केवल एक बार ही खाता है। .....

6) गाड़ी कुछ किनारे खड़ी कर लें ताकि रास्ता न रुके। .....

7) अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ। .....

8) चाहे तुम मुझे मार डालो, मैं यह राज नहीं बता सकता। .....

घ) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जिनके उपवाक्यों पर 1 या 2 अंक लिखे हैं। इन वाक्यों के सामने वाले स्थान में सही गौण उपवाक्य का अंक 1 या 2 लिखिए:

सुधीर इतना अभिमानी है (1) कि अपने पड़ोसियों से भी बात नहीं करता। (2) ☐

2) मैं चाहता था (1) कि तुम भी मेरे साथ चलते। (2) ☐

3) जिस आदमी को तुम ढूँढ़ रहे हो (1) वह मैं ही हूँ। (2) ☐

4) एक और लड़का है (1) जिसका नाम मैं भूल गया हूँ। (2) ☐

5) तुम ऐसे देख रहे हो (1) जैसे मैं ही इसके लिए जिम्मेवार हूँ। (2) ☐

6) यद्यपि उम्र में मैं आपसे छोटा हूँ, (1) लेकिन आपसे ज़्यादा अनुभवी हूँ। (2) ☐

7) जैसे ही गाड़ी आई, (1) वैसे ही लोगों में भगदड़ मच गई। (2) ☐

च) ऊपर दिए अभ्यास 7 के वाक्यों के गौण उपवाक्यों का सही प्रकार लिखिए कि वे संज्ञा उपवाक्य हैं, विशेषण उपवाक्य हैं या क्रियाविशेषण उपवाक्य हैं:

वाक्य 1) ..... उपवाक्य
वाक्य 2) ..... उपवाक्य
वाक्य 3) ..... उपवाक्य
वाक्य 4) ..... उपवाक्य
वाक्य 5) ..... उपवाक्य
वाक्य 6) ..... उपवाक्य
वाक्य 7) ..... उपवाक्य

15.4 सारांश

आपने इस इकाई में मिश्रवाक्यों के तीन प्रकारों में से दो प्रकारों (विशेषण उपवाक्य और क्रियाविशेषण उपवाक्य) की संरचना और विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। आपने पढ़ा कि–

- विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की संज्ञा की विशेषता बताता है या उसकी व्याप्ति को सीमित करता है।
- विशेषण उपवाक्य के प्रारंभ में सामान्यतः "जो" या इसके किसी विकारी रूप (जिस, जिन) का प्रयोग होता है।
- विशेषण उपवाक्य के दो भेद होते हैं–वर्णनात्मक और निर्देशात्मक।
- वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य में संज्ञा के रूप, गुण या प्रकार्य का सामान्य वर्णन होता है।
- निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य में संज्ञा की व्याप्ति को सीमित, विशिष्ट या मर्यादित करने का बोध होता है।
- कुछ विशेषण उपवाक्य वाक्य के प्रारंभ, मध्य तथा अंत में प्रयुक्त होकर आते हैं और कुछ केवल मध्य और अंत में ही आते हैं।
- क्रियाविशेषण उपवाक्य सामान्यतः क्रिया की और कभी-कभी विशेषण और स्वयं क्रियाविशेषण की विशेषता बताते हैं।
- क्रियाविशेषण उपवाक्यों के प्रारंभ में संबंधवाचक शब्द (जैसे, "जब", "जहाँ", "जैसा" आदि) प्रयुक्त होते हैं और मुख्य उपवाक्यों के प्रारंभ या बीच में "तब",

"वहाँ", "वैसा" आदि नित्यसंबंधी शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनका कभी-कभी वाक्य में लोप भी हो सकता है।

- क्रियाविशेषण उपवाक्य मुख्यतः आठ प्रकार के होते हैं--समयवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक, कारणवाचक, शर्तवाचक, विरोधवाचक तथा प्रयोजनवाचक।
- "जिस", "जिन", "जैसा" आदि कई संबंधवाचक शब्द क्रियाविशेषण का अर्थ देते हुए भी संरचना की दृष्टि से विशेषणात्मक उपवाक्य के अधिक निकट होते हैं, जैसे "जिस दिन", "जिन लोगों ने" और "जैसा लड़का"।

15.5 शब्दावली

इस पाठ में आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली :

क्रियाविशेषण उपवाक्य
विशेषण उपवाक्य
आश्रित उपवाक्य
स्वतंत्र उपवाक्य
गौण उपवाक्य
समुच्चयबोधक शब्द
संबंधवाचक सर्वनाम
संबंधवाचक क्रियाविशेषण
स्थानक्रम
परसर्ग
प्रयोजनवाचक क्रियाविशेषण
वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य
निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य
निर्धारक शब्द
ऐच्छिक लोप
समयवाचक क्रियाविशेषण
स्थानवाचक क्रियाविशेषण
रीतिवाचक क्रियाविशेषण
परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
कारणवाचक क्रियाविशेषण
शर्तवाचक क्रियाविशेषण
विरोधवाचक क्रियाविशेषण

15.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. *हिंदी व्याकरण*, कामताप्रसाद गुरु (1920) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. *हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण*, सूरजभान सिंह (1985) साहित्य सहकार, दिल्ली।
3. *हिंदी भाषा की वाक्य संरचना*, संपादक: भोलानाथ तिवारी (1986) साहित्य सहकार, दिल्ली।

15.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क.	1) कि	2) संज्ञापद	3) निर्देशात्मक	4) विकारी	5) मुख्य उपवाक्य
ख.	1) गलत	2) गलत	3) सही	4) सही	5) गलत
ग.	1) 2	2) 1	3) 2	4) 3	5) 1
	6) 2	7) 1	8) 3		

क. 1) अगर–तो 2) क्रियाविशेषण 3) नित्यसंबंधी 4) कारण 5) विशेषण

ख. 1) सही 2) गलत 3) गलत 4) गलत 5) सही

ग. 1) समयवाचक 2) स्थानवाचक 3) कारणवाचक 4) कारणवाचक
5) परिमाणवाचक 6) प्रयोजनवाचक 7) शर्तवाचक 8) विरोधवाचक

घ. 1) 2 2) 2 3) 1 4) 2
5) 2 6) 1 7) 1

8. 1) क्रियाविशेषण उपवाक्य
2) संज्ञा उपवाक्य
3) विशेषण उपवाक्य
4) विशेषण उपवाक्य
5) क्रियाविशेषण उपवाक्य
6) क्रियाविशेषण उपवाक्य
7) क्रियाविशेषण उपवाक्य

इकाई 16 हिंदी वाक्य संरचना : कुछ विशिष्ट समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य
16.1 प्रस्तावना
16.2 वाक्य संरचना संबंधी कुछ समस्या क्षेत्र
  16.2.1 सामान्य भूतकाल और "ने" प्रयोग
  16.2.2 भूतकाल के क्रिया रूपों की रूपरचना
  16.2.3 क्रिया के अकर्मक, सकर्मक और द्विकर्मक भेद
  16.2.4 अकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना
  16.2.5 सकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना
16.3 हिंदी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ
  16.3.1 प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूपरचना
  16.3.2 प्रेरणार्थक वाक्य संरचना
  16.3.3 द्विकार्यात्मक क्रियाएँ
16.4 हिंदी में वाच्य संरचना
  16.4.1 वाच्यों के भेद
  16.4.2 वाच्य संरचना के प्रकार
16.5 हिंदी के वाक्यों में अन्विति
  16.5.1 अन्विति की परिभाषा और क्षेत्र
  16.5.2 विशेषण-विशेष्य अन्विति
  16.5.3 कर्ता-क्रिया अन्विति
  16.5.4 कर्म-क्रिया अन्विति
  16.5.5 अन्विति के अन्य स्थल
16.6 सारांश
16.7 शब्दावली
16.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
16.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप वाक्य संरचना से संबंधित कुछ प्रमुख बिंदुओं को समझ सकेंगे जो समस्या मूलक हैं तथा :

- भूतकाल के क्रियारूपों की रूपावली समझा सकेंगे,
- सामान्य भूतकाल में अकर्मक क्रिया का प्रयोग बता सकेंगे,
- सामान्य भूतकाल में सकर्मक क्रिया के साथ "ने" परसर्ग के साथ वाक्य रचना कर सकेंगे,
- प्रेरणार्थक वाक्यों की रूपरचना को समझा सकेंगे,
- प्रेरणार्थक वाक्यों का प्रयोग बता सकेंगे,
- वाच्यों के भेद बता सकेंगे,
- वाच्य संरचना का सही प्रयोग कर सकेंगे,
- हिंदी व्याकरण में अन्विति के स्थलों को पहचान सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

हिंदी वाक्य संरचनाओं के प्रमुख तत्वों को आप अलग-अलग संदर्भों में पढ़ चुके हैं। किसी न किसी रूप में आप भूतकाल, प्रेरणार्थक क्रियाएँ, वाच्य और अन्विति के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी पा चुके हैं। ये चारों विषय हिंदी भाषा सीखने वाले छात्रों के लिए

कुछ समस्याएँ पैदा करते हैं। इसलिए हमने इनके बारे में विस्तार से चर्चा करने का निर्णय किया है।

इस इकाई के पहले भाग में हमने "-ने" का प्रयोग सिखाने के लिए भूतकाल की संरचना को पूरे विस्तार से लिया है। यहाँ हमने पहले "ने" रहित अकर्मक क्रिया वाले वाक्य लिए हैं और बाद में "ने" सहित सकर्मक क्रिया वाले वाक्य लिए हैं।

दूसरे भाग में प्रेरणार्थक क्रियाओं और प्रेरणार्थक वाक्य संरचना पर विचार किया गया है। तीसरे भाग में वाच्यों के भेद और वाच्य संरचना के बारे में चर्चा की गई है। अंतिम चरण में उन स्थलों की ओर संकेत किया गया है, जहाँ-जहाँ हिंदी वाक्यों में अन्विति होती है। इन समस्या मूलक स्थलों को विस्तार से पढ़ने के बाद आपकी व्याकरण संबंधी कठिनाई काफी हद तक दूर हो पाएगी।

16.2 वाक्य संरचना संबंधी कुछ समस्या क्षेत्र

क) सामान्य भूतकाल और "ने" प्रयोग

ख) हिंदी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ

ग) हिंदी मे वाच्य सरचना

ध हिंदी के वाक्यों में अन्विति

16.2.1 सामान्य भूतकाल और "ने" प्रयोग

यहाँ हम (1) भूतकाल के क्रियारूपों की रचना, (2) क्रिया के अर्थ के आधार पर अकर्मक, सकर्मक और द्विकर्मक भेद, (3) अकर्मक क्रिया के साथ भूतकाल की वाक्य संरचना (4) सकर्मक क्रिया के भूतकाल की वाक्य संरचना और (5) "ने" प्रयोग के कारण होने वाले परिवर्तनों की ओर ध्यान दिलाएँगे। आइए, अब हम इन के बारे में एक-एक करके विचार करें।

16.2.2 भूतकाल के क्रिया रूपों की रूप रचना

हिंदी क्रियाओं में भूतकाल बनाने के लिए धातु के साथ (-आ) प्रत्यय जोड़ा जाता है। यदि शब्द के अंत में व्यंजन हो तो "-आ" रूप ही जुड़ता है लेकिन यदि स्वर हो तो "आ" का परिवर्तन "या" में हो जाता है। मौटे तौर पर कहा जा सकता है कि *शब्द के अंत में स्वर होने पर "या" प्रत्यय जोड़ा जाता है तथा व्यंजन होने पर "आ" प्रत्यय।*

व्यंजनों से अंत होने वाली धातुएँ–चल, पढ़, देख, लिख, सुन, रख आदि। इनके भूतकाल के रूप हैं:

चल	+ आ	→	चला	पढ़	+ आ	→	पढ़ा
देख	+ आ	→	देखा	लिख	+ आ	→	लिखा
सुन	+ आ	→	सुना	रख	+ आ	→	रखा

स्वर-अंत वाली धातुएँ आ, खा, सो, रो, पी, सी, आदि। इनके भूतकाल रूप हैं :

आ	+ आ	→	आया	खा	+ आ	→	खाया
सो	+ आ	→	सोया	रो	+ आ	→	रोया
पी	+ आ	→	पिया	सी	+ आ	→	सिया

कुछ धातुओं के अनियमित रूप बनते हैं, उनके उदाहरण नीचे देखिए:

कर	→	किया	दे	→	दिया
जा	→	गया	ले	→	लिया
हो	→	हुआ	छू	→	छुआ

यहाँ एक बात पर ध्यान दें कि जिन धातुओं के आदि स्वर दीर्घ हैं उनका वह स्वर ह्रस्व हो जाता है जैसे, पी, सी, छू आदि के पिया, सिया, छुआ रूप बनते हैं। इन भूतकाल की क्रियाओं के रूप में पुल्लिग एकवचन, पुल्लिग बहुवचन, स्त्रीलिंग एकवचन, स्त्रीलिंग बहुवचन में आ, ए, ई, ईं के क्रम से बदलते हैं। जैसे:

	प्रत्यय	आ	जा	चल	पढ़	सो	लिंग-वचन
लड़का	आ/या	आया	गया	चला	पढ़ा	सोया	(पुल्लिग एकवचन)
लड़के	ए	आए	गए	चले	पढ़े	सोए	(पुल्लिग-बहुवचन)
लड़की	ई	आई	गई	चली	पढ़ी	सोई	(स्त्रीलिंग एकवचन)
लड़कियाँ	ईं	आईं	गईं	चलीं	पढ़ीं	सोईं	(स्त्रीलिंग बहुवचन)

16.2.3 क्रिया के अकर्मक, सकर्मक और द्विकर्मक भेद

अर्थ के आधार पर क्रिया के i) अकर्मक, ii) सकर्मक और iii) द्विकर्मक तीन भेद किए जा सकते हैं। अब हम इन भेदों के बारे में चर्चा करेंगे।

i) अकर्मक क्रिया– अकर्मक क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जिसे वाक्य में कर्म की अपेक्षा नहीं होती। ये क्रियाएँ अपना भाव खुद ही पूरी तरह से प्रकट कर देती हैं। जैसे:

	अकर्मक क्रियाएँ
रमेश हँस रहा है।	(हँसना)
मैं सुबह जल्दी उठता हूँ।	(उठना)
बच्चा रो रहा है।	(रोना)
वह कमरे में बैठा है।	(बैठना)
लड़के मैदान में खेल रहे हैं।	(खेलना)

इन वाक्यों में हँस, उठ, बैठ, रो और खेल अकर्मक क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं को वाक्य में कर्म की अपेक्षा नहीं है।

ii) सकर्मक क्रिया– सकर्मक क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जिसे वाक्य में कर्म की अपेक्षा होती है। वाक्य में सकर्मक क्रिया का भाव कर्म के बिना पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता, जैसे–

रमेश किताब पढ़ता है।

बच्चा दूध पीता है।

वे खाना खाते हैं।

माता जी पत्र लिखती हैं।

मैं टेलीविज़न देखता हूँ।

इन वाक्यों में पढ़, पी, खा, लिख और देख सकर्मक क्रियाएँ हैं और किताब, दूध खाना, पत्र और टेलीविज़न ऊपर दी हुई क्रियाओं के कर्म हैं।

इनमें से पहले वाक्य में पढ़ना सकर्मक क्रिया है, इसको किताब, अखबार, पत्र, कहानी, पत्रिका आदि किसी न किसी कर्म की अपेक्षा है। इसके बिना वाक्य का भाव अधूरा रह जाता है।

iii) द्विकर्मक क्रिया– द्विकर्मक क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जिसके साथ वाक्य में दो कर्मों का प्रयोग होता है। हिंदी में कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जिनके साथ दो कर्म आते हैं। इनमें से एक कर्म मुख्य होता है और दूसरा गौण होता है। मुख्य कर्म प्रायः वस्तु के रूप में होता है और गौण कर्म व्यक्ति के रूप में। देना, बताना, कहना, सौंपना आदि द्विकर्मक क्रियाएँ हैं। नीचे द्विकर्मक क्रियाओं के उदाहरण देखिए–

1) वह राकेश को किताब देता है।
2) उसने श्याम को एक बात बताई।
3) श्याम ने मोहन को सौ रुपए दिए।

इन वाक्यों में दे और बता "द्विकर्मक क्रियाएँ" हैं। राकेश, श्याम और मोहन "गौण कर्म" हैं तथा किताब, बात और सौ रुपए "मुख्य कर्म" हैं।

16.2.4 अकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना

हिंदी की वर्तमान काल और भविष्यत काल की वाक्य रचनाओं में क्रिया की अन्विति कर्ता के साथ होती है। इसका मतलब यह है कि कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार क्रिया का लिंग-वचन निश्चित होता है जैसे :

वर्तमान काल	राजन घर आ रहा है।	(पुल्लिग एकवचन)
	राजन और गोपालन घर आ रहे हैं।	(पुल्लिग बहुवचन)
	रजनी घर आ रही है।	(स्त्रीलिंग एकवचन)
	रजनी और शीला घर आ रही हैं।	(स्त्रीलिंग बहुवचन)
भविष्यत काल	राजन घर आएगा।	(पुल्लिग एकवचन)
	राजन और गोपालन घर आएँगे।	(पुल्लिग बहुवचन)
	रजनी घर आएगी।	(स्त्रीलिंग एकवचन)
	रजनी और शीला घर आएँगी।	(स्त्रीलिंग बहुवचन)

इन दोनों कालों के वाक्यों में कर्ता के लिंग वचन के अनुसार क्रिया के लिंग-वचन का प्रयोग किया गया है। यही बात भूतकाल के अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों पर भी लागू होती है। कर्ता और क्रिया की अन्विति के कुछ उदाहरण देखिए –

1) सुरेश बाज़ार गया।
2) सुरेश और रमेश कॉलेज गए।
3) रजनी घर गई।
4) रजनी और शीला घर गईं।

ऐसे ही कुछ वाक्य और देखिए। इनमें मैं हम आदि सर्वनामों का कर्ता के रूप में प्रयोग किया गया है।

मैं रात को दस बजे सोया।	(पुल्लिग एकवचन)
हम सुबह छह बजे उठे।	(पुल्लिग बहुवचन)
वे रात को घर नहीं आए।	(पुल्लिग एकवचन, आदरार्थ)
क्या तुम अभी स्कूल नहीं गए?	(पुल्लिग बहुवचन)
वह क्यों हँसी।	(स्त्रीलिंग एकवचन)
हम कल बाज़ार गईं।	(स्त्रीलिंग बहुवचन)
आप स्टेशन क्यों नहीं पहुँचीं?	(स्त्रीलिंग एकवचन, आदरार्थ)

16.2.5 सकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना

सकर्मक क्रिया के साथ सामान्य भूतकाल की रचना में क्रिया की अन्विति अन्यकालों की रचना से अलग तरह से होती है। इसलिए आपको या जिनकी मातृभाषा हिंदी न हो, उन्हें इसके प्रयोग में कुछ कठिनाई हो सकती है।

तुलना के लिए नीचे पहले अकर्मक क्रिया के वाक्य दिए हैं और उसके बाद सकर्मक क्रिया वाले वाक्य दिए हैं। आप इन दोनों की तुलना करके उनमें अंतर समझने की कोशिश करें।

1)	राकेश घर गया।	(अकर्मक)
	राकेश ने चिट्ठी पढ़ी।	(सकर्मक)
2)	मैं आगरा गया।	(अकर्मक)
	मैंने ताजमहल देखा।	(सकर्मक)
3)	वे होटल में ठहरे।	(अकर्मक)
	उन्होंने होटल में खाना खाया।	(सकर्मक)
4)	रजनी रात को देर से सोई।	(अकर्मक)
	रजनी ने पत्र पढ़ा।	(सकर्मक)

आपने देखा कि ऊपर दिए अकर्मक वाक्यों में कर्ता के साथ किसी परसर्ग का प्रयोग नहीं किया गया है जबकि सकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में कर्ता के साथ "ने" परसर्ग का प्रयोग किया गया है। इसके अलावा अकर्मक वाक्यों में क्रिया कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार है जबकि सकर्मक वाक्यों में क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार है। इन दोनों प्रकार के वाक्यों में अंतर निम्नलिखित प्रकार से दिखाया जा सकता है :

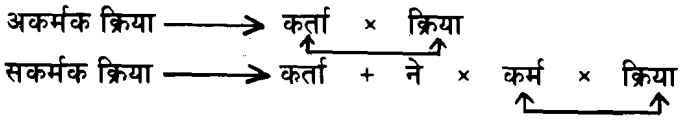

(नोट– यहाँ एक बात का ध्यान रखें कि ला, बोल, भूल, मिल आदि क्रियाएँ सकर्मक हैं लेकिन वाक्यों में वे अकर्मक क्रिया की तरह प्रयुक्त होती हैं। इन वाक्यों में क्रिया की अन्विति भी कर्म के बजाय कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार होती है) अब सकर्मक क्रियाओं वाले वाक्यों के कुछ उदाहरण और देखिए:

आलोक ने एक केला खाया।	(केला–पुं. एकवचन)
राकेश ने चार केले खाए।	(केले–पुं. बहुवचन)
राजन ने कमीज़ खरीदीं।	(कमीज़–स्त्री. एकवचन)
राजेश ने दो साड़ियाँ खरीदीं।	(साड़ियाँ–स्त्री. बहुवचन)

इन वाक्यों में कर्ता + ने है जैसे आलोक ने, राकेश ने आदि में, और क्रिया की अन्विति कर्म के लिंग-वचन के अनुसार हुई है। जैसे:

एक केला खाया → चार केले खाए।

एक कमीज़ ख़रीदी → दो साड़ियाँ खरीदीं।.

द्विकर्मक क्रियाओं के साथ भूतकाल की वाक्य रचना

ऊपर यह बताया जा चुका है कि वस्तु या अप्राणिवाचक कर्म मुख्य कर्म होता है और व्यक्ति या प्राणिवाचक कर्म गौण कर्म होता है। वाक्य में जब दो कर्मों का प्रयोग होता है तो गौण कर्म के साथ "को" का प्रयोग होता है। इन वाक्यों में क्रिया के लिंग-वचन की अन्विति मुख्य कर्म के अनुसार होती है। जैसे–

कर्ता + ने	गौणकर्म + को	मुख्य कर्म	क्रिया
राजेश ने	दुकानदार को	सौ रुपए	दिए
शीला ने	पिताजी को	चिट्ठी	भेजी
नानी ने	बच्चों को	कहानी	सुनाई

कर्ता-कर्म निरपेक्ष क्रिया

क) यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि सामान्य भूतकाल में जब सकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है तो कर्ता के साथ "ने" का प्रयोग होता है और क्रिया की अन्विति कर्म के साथ होती है। लेकिन भूतकाल में जब कर्म के साथ "को" का प्रयोग होता है तो क्रिया की अन्विति न तो कर्ता के अनुसार होती है न "को" वाले "कर्म" के अनुसार। अगर वाक्य में एक ही कर्म हो और उसके साथ परसर्ग हो तो क्रिया पुल्लिग-एकवचन में रहती है जैसे–

पुलिस ने चोरों को पकड़ा।

अध्यापक ने आपकी लड़की को बुलाया।

आपने नौकरानी को कहाँ भेजा?

डॉक्टर ने मरीज़ को देखा।

ख) कभी-कभी वाक्य में कर्ता के साथ "-ने" होने पर भी जब "कर्म" का स्पष्ट उल्लेख नहीं होता तो ऐसी स्थिति में भी क्रिया पुल्लिग-एकवचन में रहती है। ऐसे कुछ वाक्यों के उदाहरण देखिए:

1) अध्यापक ने छात्र से पूछा.....

2) राकेश ने क्या खाया?

3) क्या तुमने सुना.....

4) आलोक ने बताया.....

अभ्यास 1

क) सही वाक्यों के सामने (√) का और गलत वाक्यों के सामने (×) का निशान लगाइए।

1) अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में कर्म नहीं होता। ☐

2) द्विकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में एक ही कर्म होता है। ☐

3) अकर्मक वाक्यों में कर्ता के साथ "ने" का प्रयोग नहीं होता। ☐

4) मुख्य कर्म के साथ "को" का प्रयोग किया जाता है। ☐

5) कर्ता-कर्म निरपेक्ष वाक्यों में क्रिया की अन्विति कर्ता के अनुसार होती है। ☐

ख) नीचे लिखे वाक्यों को सामान्य भूतकाल में बदलिए।

1) वह सुबह जल्दी उठता है।

2) माता जी चिट्ठी लिख रही हैं।

3) रमेश राकेश को रुपए दे रहा है।

4) हम होटल में खाना खाते हैं।

5) राजेश दो साड़ियाँ खरीद रहा है।

16.3 हिंदी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ

हिंदी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ ऐसी व्युत्पन्न क्रियाएँ हैं जो सकर्मक कार्य व्यापार को व्यक्त करते हुए यह बताती हैं कि कार्य व्यापार सीधे उसके कर्ता द्वारा नहीं बल्कि किसी दूसरे ऐसे व्यक्ति के द्वारा किया जा रहा है जो वास्तव में उस काम को करने वाला नहीं है।

सामान्य रूप से वाक्य में एक कर्ता होता है जो किसी कार्य को करता है। कभी-कभी एक ही वाक्य में कर्ता के साथ काम करने की प्रेरणा देने वाला दूसरा व्यक्ति भी होता है। इसमें प्रेरणा देने वाला कर्ता, कार्य करने वाले कर्ता को काम की प्रेरणा देता है। ऐसी संरचना को प्रेरणार्थक संरचना कहते हैं और जिस क्रिया रूप का प्रयोग इस कार्य को व्यक्त करने के लिए होता है उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

16.3.1 प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूपरचना

हिंदी की ज़्यादातर सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप बनाए जा सकते हैं। क्रिया के प्रेरणार्थक रूप बनाने के लिए मूल धातु में -आ (-ला) और -वा (-लवा) प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इनसे क्रमशः प्रत्यक्ष (प्रथम) प्रेरणार्थक और अप्रत्यक्ष (द्वितीय) प्रेरणार्थक रूप बनते हैं। इन प्रत्ययों को जोड़कर प्रेरणार्थक रूप बनाते समय क्रिया के भीतरी स्वरों में कभी-कभी कुछ परिवर्तन भी हो जाता है।

आइए, अब हम प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूपरचना को देखें।

क) जिन धातुओं के अंत में व्यंजन होता है और पहला स्वर ह्रस्व या छोटा होता है, उनके रूप देखिए–

सरल रूप (धातु)		**प्रेरणार्थक**	
अकर्मक	सकर्मक	प्रत्यक्ष (प्रथम) प्रेरणार्थक	अप्रत्यक्ष (द्वितीय) प्रेरणार्थक
	करना	कराना	(करवाना)
	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना

गिरना	–	गिराना	गिरवाना
उठना	–	उठाना	उठवाना
उतरना	–	उतारना	उतरवाना
बजना	–	बजाना	बजवाना
निकलना	–	निकालना	निकलवाना

ख) यदि धातु का पहला स्वर दीर्घ (लंबा) हो तो वह ह्रस्व (छोटे) स्वर में बदल जाता है जैसे–"ए" और "ओ" "इ" और "उ" में बदल जाते हैं लेकिन "ऐ" और "औ" वैसे ही रहते हैं उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता जैसे–

अकर्मक	सकर्मक	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
जागना	–	जगाना	जगवाना
जीतना	–	जिताना	जितवाना
घूमना	–	घुमाना	घुमवाना
	देखना	दिखाना	दिखवाना
	सीखना	सिखाना	सिखवाना
	बोलना	बुलाना	बुलवाना
तैरना	–	तैराना	तैरवाना
फैलना	–	फैलाना	फैलवाना
दौड़ना	–	दौड़ाना	दौड़वाना
खौलना	–	खौलाना	खौलवाना

ग) जिन धातुओं के अंत में दीर्घ स्वर होता है जैसे–सी, पी आदि, ऐसी क्रियाओं का स्वर ह्रस्व (छोटा) हो जाता है और उनसे प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक बनाने के लिए उनके साथ "-आ" के बजाय "ला" और "-वा" के बजाय "लवा" जोड़ा जाता है। धातु के "ए" और "ओ" क्रम से "इ" और "उ" में बदल जाते हैं जैसे–

अकर्मक	सकर्मक	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
	सीना	सिलाना	सिलवाना
	पीना	पिलाना	पिलवाना
सोना		सुलाना	सुलवाना
	धोना	धुलाना	(धुलवाना)
	देना	दिलाना	(दिलवाना)
रोना		रुलाना	(रुलवाना)

नोट: "खाना" क्रिया के रूप "खिलाना" और "खिलवाना" बनते हैं जो अपवाद हैं।

घ) कुछ अकर्मक क्रियाओं के ह्रस्व स्वर सकर्मक क्रियाओं में दीर्घ हो जाते हैं और "ए, इ, उ, तथा ऊ"–"ए, ओ" में बदल जाते हैं, लेकिन प्रेरणार्थक रूपों में स्वर ह्रस्व ही रहता है। जैसे:

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
फटना	फाड़ना	फड़वाना
पिटना	पीटना	पिटवाना

खिचना	खींचना	खिचवाना
बिकना	बेचना	बिकवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
रुकना	रोकना	रुकवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना

(ऊपर जो प्रेरणार्थक रूप कोष्ठक में दिए गए हैं,उनका प्रयोग नहीं होता इसलिए उन्हें मिथ्या प्रेरणार्थक कहते हैं।)

16.3.2 प्रेरणार्थक वाक्य संरचना

प्रेरणार्थक वाक्य संरचना को हम नीचे दिए आरेख में कुछ इस प्रकार दिखा सकते हैं।

व्याकरणिक कर्ता	सक्रिय कर्ता	प्रेरणार्थक क्रिया
कर्ता[1] (प्रेरक)	कर्ता[2] + से (कार्य करने वाला)	धातु + **वा** + पक्ष, काल आदि + सहायक क्रियाएँ

कुछ उदाहरण देखिए–

	सामान्य वाक्य	प्रेरणार्थक वाक्य
1.	चपरासी घंटी बजाता है।	प्रिंसिपल चपरासी से घंटी बजवाता है। (प्रेरक) (सक्रिय कर्ता + से) (प्रेरणार्थक क्रिया + वा)
2.	अध्यापक राजन को पढ़ाता है।	मैं अध्यापक से (राजन को) पढ़वाता हूँ।
3.	नौकर खाना बना रहा है।	हम नौकर से खाना बनवा रहे हैं।
4.	मोहन पत्र लिख रहा है।	पिताजी मोहन से पत्र लिखवा रहे हैं।

प्रेरणार्थक वाक्यों में क्रिया की अन्विति प्रेरक कर्ता से होती है और क्रिया के साथ पक्ष (-ता, -रहा, -या), काल (है, था) आदि सहायक क्रियाओं के प्रत्यय लगते हैं।

जब किसी वाक्य में सक्रिय कर्ता को व्याकरणिक कर्ता द्वारा सीधे प्रेरणा देने के बजाय किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से प्रेरणा दी जाए तो उसे अप्रत्यक्ष (द्वितीय) प्रेरणार्थक कहते हैं। इसे नीचे दिए आरेखों में तीन स्तरों पर देखिए:

क) **सामान्य वाक्य** (पहला स्तर)

बच्चा सो रहा है। यहाँ बच्चा भोक्ता (कार्य को अनुभव करने वाला) है।

ख) **प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक वाक्य** (दूसरा स्तर)

कर्ता[1]	+ कर्ता[2] + को	प्रथम प्रेरणार्थक
(मूलकर्ता) माँ	(भोक्ता) बच्चे को	(क्रिया + आ (ला) + सहायक क्रिया) सुला रही है।

ग) **अप्रत्यक्ष प्रेरणार्थक वाक्य**

संज्ञा[1]	संज्ञा	संज्ञा[2]	प्रेरणार्थक[2]
(प्रेरक)	(भोक्ता) (व्याकरणिक कर्ता)	(प्रेरित)	(क्रिया-)
माँ	बच्चे को	नौकरानी से	सुलवा रही है।
कर्ता	कर्म + को	सक्रिय कर्ता + से	पक्ष-काल प्रत्यय

नीचे कुछ उदाहरणों से यह प्रक्रिया और स्पष्ट हो जाएगी:

उदाहरण-1

सामान्य वाक्य	i)	बच्चा सो रहा है।
प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक	ii)	माँ बच्चे को सुला रही है।
अप्रत्यक्ष प्रेरणार्थक	iii)	माँ बच्चे को नौकरानी से सुलवा रही है।

उदाहरण-2	i)	मैंने दूध पीया।
	ii)	दुकानदार ने मुझे दूध पिलाया।
	iii)	पिताजी ने मुझे दुकानदार से दूध पिलवाया।
उदाहरण-3	i)	शीला कार चलाना सीख रही है।
	ii)	वह शीला को कार चलाना सिखा रहा है।
	iii)	वह ड्राइवर से शीला को कार चलाना सिखवा रहा है।

यदि कर्ता ही भोक्ता (experiencer = अनुभव करने वाला) हो तो सामान्यतः एक अतिरिक्त प्रेरणार्थक रूप का प्रयोग होता है। प्रत्यक्ष (प्रथम) प्रेरणार्थक धातु के साथ -आ (-ला) जोड़ा जाता है और कभी-कभी क्रिया के रूप में भी परिवर्तन हो जाता है। अप्रत्यक्ष प्रेरणार्थक रूप की रचना प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक रूप में "-वा" जोड़कर की जाती है। प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक वाक्य का जो कर्ता होता है उसके साथ "से" के बजाय "को" परसर्ग जोड़ा जाता है। द्वितीय प्रेरणार्थक में "से" परसर्ग जुड़ने पर एक अतिरिक्त कर्ता की आवश्यकता होती है।

इससे पहले ऊपर दी तालिकाओं में आपने अकर्मक क्रियाओं को सकर्मक तथा प्रथम प्रेरणार्थक में बदलने के बारे में पढ़ा है। हम नीचे कुछ उदाहरणों के द्वारा वाक्यों में अकर्मक, सकर्मक और प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया रूपों का प्रयोग दिखा रहे हैं। इनकी तुलना करके देखिए:

क) **अकर्मक → सकर्मक**

i) आज वह घर से नहीं निकला।
→ उसे घर से निकाल दो।

ii) क्या दरवाज़ा खुल गया।
→ दरवाज़ा खोल दो।

ख) **अकर्मक → प्रेरणार्थक**

i) राम घर से नहीं निकला।
→ मालिक ने राम को घर से निकलवा दिया।

ii) मेरा सामान गाड़ी में नहीं चढ़ा।
→ तुम मेरा सामान कुली से चढ़वा दो।

ग) **सकर्मक → प्रेरणार्थक**

i) मेहमान घर में खाना खाएँगे।
→ तुम मेहमानों को खाना खिलवा दो।

ii) तुम विकास को बुलाओ।
→ तुम विकास को नौकर से बुलवाओ।

16.3.3 द्विकार्यात्मक क्रियाएँ

हिंदी की कुछ क्रियाएँ देखने में प्रेरणार्थक क्रियाओं की तरह लगती हैं लेकिन ये क्रियाएँ एक ही कार्य के दो पक्षों को बताती हैं जैसे:

पढ़ना – पढ़ाना

देना – लेना

बेचना – खरीदना

इन क्रियाओं का कार्य ऐसा होता है जिसमें दो व्यक्ति शामिल होते हैं। अगर एक व्यक्ति की ओर से देखें तो एक क्रिया का प्रयोग होता है और दूसरे व्यक्ति की ओर से देखें तो दूसरी क्रिया का प्रयोग होता है। ऐसी क्रियाएँ दो स्वतंत्र क्रियाएँ होती हैं, परंतु अर्थ की दृष्टि से ये एक-दूसरे से संबंधित होती हैं। इन क्रियाओं को द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है। जैसे:

i) राजेश ने राजन को दस रुपए दिए।
→ राजन ने राजेश से रुपए लिए।

ii) अध्यापक छात्र को गणित पढ़ाता है।
→ छात्र अध्यापक से गणित पढ़ता है।

iii) शीला ने कमला को साड़ियाँ बेचीं।
→ कमला ने शीला से साड़ियाँ खरीदीं।

मिथ्या प्रेरणार्थक क्रियाएँ

हिंदी की कुछ ऐसी भी क्रियाएँ हैं जो देखने में प्रथम प्रेरणार्थक लगती हैं लेकिन वे प्रथम प्रेरणार्थक होती नहीं। इन्हें मिथ्या प्रेरणार्थक कह सकते हैं। ये क्रियाएँ जो सामान्य क्रियाओं की प्रथम प्रेरणार्थक लगती हैं, वास्तव में सामान्य क्रियाएँ होती हैं और जो क्रियाएँ मूल क्रियाएँ लगती हैं वे वास्तव में उनके कर्मवाच्य रूप हैं जैसे –"काटना" क्रिया "कटाना" की प्रथम प्रेरणार्थक प्रतीत होती है लेकिन इसके अर्थ से यह स्पष्ट पता चलता है कि "कटना" क्रिया काटना का कर्मवाच्य रूप है, मूलधातु नहीं। इसलिए "काटना" को प्रेरणार्थक रूप नहीं कह सकते। "कटाना" "काटना" का प्रथम प्रेरणार्थक रूप है। यह 'कटना" का द्वितीय प्रेरणार्थक रूप नहीं है जैसा कि बहुत से लोग समझते हैं। "कटना" जैसा क्रियाओं का प्रयाग कर्म वाच्य की तरह होता हैं। उन्हें सामान्य कर्मवाच्य रचना के बिना भी मूलतः कर्मवाच्य कहना ही उचित होगा। ये हमेशा अकर्मक रहती हैं। नीचे कुछ ऐसी अकर्मक क्रियाएँ और उनके सकर्मक रूप दिए गए हैं, जैसे–

अकर्मक		सकर्मक	अकर्मक		सकर्मक
कटना	→	काटना	खुलना	→	खोलना
बँधना	→	बाँधना	पिसना	→	पीसना आदि

16.4 हिंदी में वाच्य संरचना

16.4.1 वाच्यों के भेद

क्रिया के उस रूपांतरण को वाच्य कहते हैं जो यह बताता है कि वाक्य में जिसका विधान किया गया है वह कर्ता है, कर्म है या क्रिया का भाव है। इस आधार पर वाच्यों को क्रम से i) *कर्तृवाच्य* ii) *कर्मवाच्य* iii) *भाववाच्य* कहा जाता है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि *वाच्य को कर्ता, कर्म या भाव की प्रमुखता के कारण कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य में बाँटा जाता है।*

कुछ विद्वान वाच्यों के दो ही भेद मानते हैं, ये भेद हैं:

1) कर्तृवाच्य और 2) अकर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य के बारे में कोई मतभेद नहीं है लेकिन अकर्तृवाच्य के दो भेद कर्मवाच्य और भाववाच्य हैं। विद्वानों के मत में कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्ता सक्रिय नहीं होता इसलिए दोनों को अकर्तृवाच्य के अंतर्गत रखा जा सकता है।

16.4.2 वाच्य संरचना के प्रकार

कर्तृवाच्य : आइए, पहले हम कर्तृवाच्य की वाक्य संरचना के बारे में विचार करें। वाक्य में जब क्रिया की अन्विति कर्ता से होती है यानी जिस वाक्य में क्रिया कर्ता के पुरुष-लिंग-वचन के अनुसार होती है तो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे–

राजन किताब पढ़ता है।
लड़कियाँ गाना गाती हैं।

इन वाक्यों में *राजन* और *लड़कियाँ* कर्ता हैं। वाक्य में राजन (पुं. एकवचन) और लड़कियाँ (स्त्री. बहुवचन) इन दोनों में पुरुष-लिंग-वचन के अनुसार क्रम से "*पढ़ता है*" और "*गाती हैं*" क्रियाओं का प्रयोग हुआ है। लेकिन कर्मवाच्य के वाक्यों में क्रिया की अन्विति कर्ता से नहीं होती। आइए, अब कर्मवाच्य वाक्यों की रचना को देखें।

कर्मवाच्य

कर्मवाच्य वाक्यों में क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होती है और वह हमेशा सकर्मक होती है। कर्मवाच्य वाक्य संरचना को एक आरेख द्वारा नीचे प्रस्तुत किया गया है:

कर्ता + द्वारा –के द्वारा	कर्म	सकर्मक क्रिया + आ(ा) + जा + पक्षकाल आदि का रूप (लिंगवचन के अनुसार)

जैसे:

1) *राजन द्वारा किताब पढ़ी जा रही है।*
2) *लड़कियों द्वारा गाना गाया जा रहा है।*

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य कैसे बनाएँ?

अब हम चर्चा करेंगे कि कर्तृवाच्य वाक्यों को कर्मवाच्य वाक्यों में कैसे बदला जा सकता है:

i) कर्तृवाच्य वाक्य का कर्म कर्मवाच्य वाक्य में कर्ता बन जाता है और कर्तृवाच्य वाक्य का कर्ता कर्म बन जाता है।

ii) कर्मवाच्य वाक्यों में क्रिया हमेशा सकर्मक होती है।

iii) कर्मवाच्य वाक्यों में क्रिया की अन्विति कर्म के साथ होती है।

iv) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय मुख्य धातु के साथ भूतकालिक "-आ/-या" प्रत्यय जोड़ा जाता है और इसके बाद, "जा+पक्ष" और काल सूचक प्रत्यय लगते हैं जिनकी अन्विति कर्म के लिंग वचन के अनुसार होती है। जैसे–

क) मोहन ने यह किताब लिखी थी।
→ मोहन द्वारा यह किताब लिखी गई थी।

ख) पुलिस ने चार डाकू पकड़े।
→ पुलिस द्वारा चार डाकू पकड़े गए।

ग) रमेश ने यह कविता सुनाई थी।
→ रमेश द्वारा यह कविता सुनाई गई थी।

घ) ये मकान ठेकेदार ने बनवाए थे।
→ ये मकान ठेकेदार द्वारा बनाए गए थे।

अगर कर्मवाच्य वाक्य में दो कर्म हों तो क्रिया मुख्य कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होती है। बशर्ते मुख्य कर्म के साथ परसर्ग "को" न हो, जैसे–

i) यहाँ स्त्रियों को *सिलाई सिखाई जाती है।*

ii) सरकार द्वारा भूकंप पीड़ितों को *कंबल बाँटे गए।*

iii) कल के कार्यक्रम में सब लोगों को *कॉफी पिलाई जाएगी।*

कर्ता + (के) द्वारा का प्रयोग– कर्मवाच्य वाक्यों में-कर्ता के बाद "के द्वारा" या "द्वारा" का प्रयोग होता है। आमतौर पर संज्ञा के बाद "द्वारा" और "सर्वनाम" के साथ "के द्वारा" का प्रयोग होता है, जैसे:

यह भाषण नेता जी द्वारा दिया गया
यह भाषण उनके द्वारा दिया गया।

ये मकान सरकार द्वारा बनाए गए हैं।
क्या ये मकान आपके द्वारा बनाए गए हैं।

भाववाच्य —भाववाच्य की संरचना कर्ता-कर्म निरपेक्ष (neutral) होती है। यानी क्रिया हमेशा पुल्लिग-एकवचन में रहती है। भाववाच्य संरचना में वाक्य में कर्म नहीं होता और क्रिया अकर्मक होती है। जैसे:

क) 1) मुझसे चला नहीं जाता।
2) उससे उठा नहीं जाता।
3) चलो, अब सोया जाए।

पहल दो वाक्यों में कर्ता के साथ "से" परसर्ग का प्रयोग हुआ है और तीसरे वाक्य में कर्ता का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है। भाववाच्य की रचना नीचे आरेख में दी गई है—

कर्ता + से	क्रिया + -आ/-या	(नहीं) + जा + पुं. एकवचन)

कर्तालोप— हिंदी में कर्मवाच्य वाक्यों में प्रायः कर्ता का लोप हो जाता है, लेकिन ऐसे वाक्यों में भी क्रिया की अन्विति कर्म के साथ ही होती है। दूसरे, यदि वाक्य में कर्म के बाद परसर्ग हो या वाक्य में कर्म का उल्लेख न हो अथवा कर्म उपवाक्य के रूप में हो तो क्रिया पुल्लिग एकवचन में रहती है, जैसे:

i) लोग दक्षिण में चावल खाते हैं। (कर्तृवाच्य)
दक्षिण में चावल खाया जाता है। (कर्मवाच्य)

ii) लोग बंगाल में मछली खाते हैं। (कर्तृवाच्य)
बंगाल में मछली खाई जाती है। (कर्मवाच्य)

iii) आप नौकर को बुलाइए। (कर्तृवाच्य)
नौकर को बुलाया जाए। (कर्मवाच्य)

iv) सरकार अपराधी को सज़ा दे। (कर्तृवाच्य)
अपराधी को सज़ा दी जाए। (कर्मवाच्य)

नीचे कर्मवाच्य उपवाक्य से संबंधित दो वाक्य देखिए:

i) कहा जाता है कि उसने चोरी की है।

ii) सुना जाता है कि शहर में सेना बुलाई गई है।

कर्तालोप के कुछ और उदाहरण देखिए—

1) मार्च में होली मनाई जाती है।

2) दिसंबर में क्रिसमस का त्योहार मनाया जाता है।

3) यहाँ हिंदी बोली जाती है।

4) कहा जाता है कि पहले यहाँ एक महल था।

5) सुना जाता है कि खाडी क्षेत्र में लड़ाई छिड़ गई है।

6) देखा गया है कि लोग दफ़्तर में देर से आते हैं।

असमर्थता सूचक वाक्य

क) कर्मवाच्य और भाववाच्य वाक्यों में "कर्ता+से" का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग प्राय. असमर्थता का भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है। असमर्थता सूचक वाक्यों का प्रयोग प्रायः निषेध वाचक वाक्यों में ही किया जाता है। कर्मवाच्य वाक्यों में क्रिया सकर्मक होती है लेकिन भाववाच्य में क्रिया अकर्मक होती है। आप देखेंगे कि कर्तृवाच्य के सकारात्मक वाक्यों में सामर्थ्य सूचित करने के लिए मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रिया "सक" का प्रयोग किया जाता है। नीचे कर्तृवाच्य के सामर्थ्य सूचक वाक्यों के उदाहरण देखिए:

ख) **कर्तृवाच्य सामर्थ्य बोधक**
1) आप यह काम कर सकते हो।

2) मैं यह कविता याद कर सकता हूँ।

3) क्या आप मेरे घर आ सकेंगे?

ग) **कर्तृवाच्य असामर्थ्यबोधक**

4) हम तुम्हें नौकरी नहीं दे सकते।

5) पिता जी अब अखबार नहीं पढ़ सकते।

6) आज माता जी खाना नहीं बना सकीं।

कर्ता + से वाले असमर्थता बोधक कर्तृवाच्यों का कर्मवाच्य वाक्यों में रूपांतरण

कर्तृवाच्य – तुम यह चिट्ठी नहीं पढ़ सकोगे।
कर्मवाच्य – तुमसे यह चिट्ठी नहीं पढ़ी जाएगी।

कर्तृवाच्य – वह आपका काम नहीं कर सकेगा।
कर्मवाच्य – उससे आपका काम नहीं किया जाएगा।

अब कर्तृवाच्य के निषेधवाचक वाक्यों का भाववाच्य में रूपांतरण देखिए, इनमें "कर्ता+से" के साथ क्रिया "भूतकाल+जा" का पुल्लिंग एकवचन में प्रयोग होता है।

कर्तृवाच्य – मीना चल नहीं सकती।
भाववाच्य – मीना से चला नहीं जाता।

कर्तृवाच्य – पिता जी बिस्तर से उठ नहीं सकते।
भाववाच्य – पिता जी से बिस्तर से उठा नहीं जाता।

घ) अकर्मक क्रियाओं द्वारा कर्मवाच्य का बोध

इससे पहले आपने "जा" क्रिया के द्वारा बनने वाले कर्मवाच्य रूपों के बारे में पढ़ा है। हिंदी में कुछ ऐसी क्रियाएँ भी है जो स्वभाव से कर्मवाच्य हैं, ये सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं। इन क्रियाओं का कर्तृवाच्य रूप सकर्मक होता है। इनके कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य रूप दोनों स्वतंत्र क्रियाओं के रूप में विद्यमान हैं। इनके रूपों में कर्मवाच्य क्रियाओं का स्वर ह्रस्व होता है और कर्तृवाच्य क्रियाओं का स्वर दीर्घ होता है। जैसे:

कर्मवाच्य-अकर्मक	**कर्तृवाच्य**
कटना	काटना
खुलना	खोलना
बँधना	बाँधना
बिकना	बेचना
बनना	बनाना
टूटना	तोड़ना
फटना	फोड़ना
पिटना	पीटना

इन क्रियाओं के वाक्यों में प्रयोग के उदाहरण देखिए:

1) पेड़ कट रहा है।

2) किताबें खूब बिक रही हैं।

3) यहाँ मिट्टी के खिलौने बनते हैं।

4) गिलास कैसे टूटा?

5) किताब फट रही है।

6) गेहूँ पिस रहा है।

7) दरवाज़ा खुल गया।

8) आज दुकानें जल्दी बंद हो गईं।

9) कपड़े धुल रहे हैं।

10) सामान बँध रहा है।

क्रियाओं के कर्तृवाच्य रूपों का प्रयोग सामान्य सकर्मक क्रियाओं के समान होता है। इन क्रियाओं के भी कर्मवाच्य रूप "जाना" सहायक क्रिया जोड़कर बनाए जा सकते हैं। जैसे:

पेड़ कट रहा है	→	पेड़ काटा जा रहा है।
किताबें बिक रही हैं	→	किताबें बेची जा रही हैं।
खिलौने बनते हैं	→	खिलौने बनाए जाते हैं।
गेहूँ पिस रहा है	→	गेहूँ पीसा जा रहा है।
दरवाज़ा खुला	→	दरवाज़ा खोला गया।
कपड़े धुल रहे हैं	→	कपड़े धोए जा रहे हैं।

16.5 हिंदी के वाक्यों में अन्विति

इससे पहले की इकाइयों में अन्विति के बारे में संक्षिप्त चर्चा की जा चुकी है। किसी न किसी संदर्भ में इसका सभी इकाइयों में उल्लेख हुआ है। यहाँ हम हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले अन्विति के संदर्भों की जानकारी देंगे।

16.5.1 अन्विति की परिभाषा और क्षेत्र

भाषा में किसी एक शब्द की व्याकरणिक कोटि के आधार पर यदि उस कोटि की विशेषता का प्रभाव दूसरे शब्दों पर पड़े तो उसे अन्विति कहते हैं।

हिंदी में अन्विति का प्रभाव मुख्य रूप से निम्नलिखित स्थलों पर पड़ता है। ये हैं:

1. कर्ता, 2. कर्म, 3. पूरक, और 4. क्रिया

16.5.2 विशेषण-विशेष्य अन्विति

पदबंधों में कर्ता, कर्म और कुछ पूरकों की रचना संज्ञाओं और सर्वनामों से होती है। संज्ञाओं और सर्वनामों की लिंग-वचन और पुरुष नामक तीन व्याकरणिक कोटियाँ हैं। इन तीनों कोटियों का प्रभाव क्रिया पर पड़ता है। संज्ञा की अन्विति पदबंध स्तर पर भी होती है। इसे विशेषण और विशेष्य की अन्विति कहते हैं। जैसे:

छोटा लड़का	बड़ा लड़का	(पुं. एकवचन)
मेरा लड़का	उसका लड़का	(पुं. एकवचन)
हमारी लड़की	हमारी लड़कियाँ	(स्त्री. एकवचन/बहुवचन)
नया घर	पुराना कपड़ा	(पुं. एकवचन)
अच्छी किताब	टूटी मेज़	(स्त्री. एकवचन)
मेरे घर में	मेरे कमरों में	(पुं. एकवचन/बहुवचन विकारी)
मेरे भाई	मेरे भाइयो	(पु. एक/बहुवचन संबोधन)
मेरी बहन	मेरी बहनो	(स्त्री. एक/बहुवचन संबोधन)

16.5.3 कर्ता-क्रिया अन्विति

दूसरा स्थल कर्ता के साथ क्रिया की अन्विति का है। इनके उदाहरण नीचे दिए कालों में मिलते हैं।

i) **वर्तमान काल के सर्वनामों के साथ "हो" सहायक क्रिया की अन्विति**

(पुरुष-वचन के अनुसार)

मैं–हूँ।

तू–है। तुम–हो।

वह–है।

हम, आप, वे → हैं।

ii) **भूतकाल–सर्वनामों के साथ सहायक क्रिया की अन्विति**

(लिंग–वचन के अनुसार)

मैं/तू/वह·····था।	(पुल्लिग एकवचन)
हम/तुम/आप/वे·····थे।	(पुल्लिग बहुवचन)
मैं/तू/वह·····थी।	(स्त्रीलिग एकवचन)
हम/तुम/आप/वे·····थे।	(स्त्रीलिग बहुवचन)

iii) **सामान्य वर्तमान** **(लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार)**

वह/राजन जाता है।	वह/रीता जाती है।
वे/लड़के पढ़ते हैं।	वे/लड़कियाँ पढ़ती हैं।
हम/आप जाते हैं।	हम/आप जाती हैं।
तुम कहाँ रहते हो?	तुम कहाँ रहती हो?
मैं दिल्ली में पढ़ता हूँ।	मैं दिल्ली में पढ़ती हूँ।

iv) **सातत्य वर्तमान** **(लिंग-वचन-पुरुष अन्विति)**

वह/तू खेल रहा है/रही है। वे/आप खेल रहे हैं/रही हैं।

तुम क्या देख रहे हो/देख रही हो?

हम/आप/वे काम कर रहे हैं/कर रही हैं।

v) **आज्ञार्थक और विधि (पुरुष-वचन के अनुसार अन्विति)**

आज्ञार्थक और विध्यर्थक वाक्यों में कर्ता से क्रिया की अन्विति पुरुष-वचन के अनुसार होती है।इसमें लिंग का अन्विति पर प्रभाव नहीं पड़ता जैसे–

1) तू/वह बाज़ार जाए।	आप/वे/हम बाज़ार जाएँ।
2) तुम बाज़ार जाओ।	मैं बाज़ार जाऊँ।

vi) **भविष्यत काल (पुरुष वचन और लिंग वचन की अन्विति)**

भविष्यत काल में कर्ता और क्रिया के बीच अन्विति होती है। भविष्यत काल में दो स्तरों पर अन्विति पाई जाती है। भविष्यत काल की अन्विति का पहला स्तर पुरुष-वचन अन्विति का है जो आज्ञार्थ और विध्यर्थ वाक्यों के समान है। दूसरे स्तर पर भविष्यत काल के प्रत्यय "ग" की कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार अन्विति होती है, नीचे दो संभावनार्थक वाक्य दिए गए हैं। इनकी भविष्यत काल के वाक्यों से तुलना कीजिए–

1) शायद वह बाज़ार जाए।

2) शायद हम बाज़ार जाएँ।

यदि इसी रचना को भविष्यत काल में बदल दें तो इसमें 'जा" प्रत्यय जुड़ेगा जो लिंग-वचन की सूचना देता है। ऊपर दिए वाक्यों को भविष्यत काल में नीचे दिए प्रकार से बदला जा सकता है।

वह बाज़ार जाएगा।

हम बाज़ार जाएँगे।

कुछ उदाहरण देखिए

1) तू/वह जाएगा। तू/वह जाएगी।
2) तुम/जाओगे/जाओगी। मैं/जाऊँगा/जाऊँगी।
3) हम/आप/वे जाएँगे/जाएँगी।

vii) **भूतकाल में कर्ता और क्रिया की अन्विति**

भूतकाल में जब क्रिया अकर्मक होती है तो कर्ता और क्रिया की अन्विति लिंग-वचन के अनुसार होती है, जैसे–

1) तू/वह/मैं गया/गई।
2) तुम गए/गईं।
3) आप/वे/हम गए/गईं।

16.5.4 कर्म-क्रिया अन्विति

(सामान्य भूतकाल में सकर्मक क्रिया के संदर्भ में)
सामान्य भूतकाल में जब क्रिया सकर्मक हो तो क्रिया की अन्विति कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होती है, परंतु कर्म के बाद यदि "को" परसर्ग हो तो क्रिया पुल्लिग एकवचन में रहती है। जैसे

1) मैंने/तुमने/उसने/हमने/आपने/उन्होंने एक मकान देखा।
2) उसने चिड़िया मारी। रजनी ने चाय बनाई।
3) मैंने एक लड़की को देखा।
4) उसने लड़कों को बुलाया।

द्विकर्मक क्रिया की अन्विति

क) भूतकाल में जब द्विकर्मक क्रिया हो तो (गौण) कर्म के साथ "को" परसर्ग का प्रयोग होता है और क्रिया की अन्विति मुख्य (अचेतन) कर्म के साथ होती है, जैसे:

1) मालिक ने नौकर को सौ रुपए दिए।
2) मैंने धोबी को कपड़े भिजवाए।

ख) कर्मवाच्य वाक्यों में जब लौकिक (व्यावहारिक) कर्म के साथ "से" परसर्ग जोड़ा जाता है तब क्रिया की अन्विति मुख्य कर्म से होती है, जैसे:

1) लड़के से सामान नहीं उठाया जाता।
2) कमला से रोटी नहीं खाई जाती।

ग) हिंदी की कर्म प्रधान (objectival) रचनाओं में भी क्रिया की अन्विति कर्म से होती है, जैसे :

-ना है -ना पड़ -ना चाहिए आदि संरचनाओं में :

-ना है = मुझे मकान देखना है। मुझे यह कहानी पढ़नी है।

-ना पड़ = तुम्हें कहना मानना पड़ेगा। तुम्हें मेरी बात सुननी पड़ेगी।

-ना चाहिए = तुम्हें पत्र लिखना चाहिए। तुम्हें चाय पीनी चाहिए।

-ना आना = राजन को तैरना आता है। मुझे तमिल पढ़नी आती है।

-लगना = मुझे भूख/प्यास लगी है।

16.5.5 अन्विति के अन्य स्थल

i) **कर्ता-पूरक अन्विति (कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार)**

किसी पदबंध में जो शब्द कर्ता के भाव को पूरा करता है उसे कर्ता पूरक कहते हैं जैसे–

"घोड़ा काला है" वाक्य में कर्ता "घोड़ा" के अर्थ को पूर्णता प्रदान करने के लिए

"वह कैसा है"—यह प्रश्न किया जाए तो इसकी पूर्ति उसके गुण "काला" के द्वारा होती है। ऐसे वाक्यों में पूरक की अन्विति संबंधित संज्ञा शब्द के लिंग-वचन के अनुसार होती है जैसे:

	एकवचन	**बहुवचन**
1)	घोड़ा काला है।	घोड़े काले हैं।
2)	आम मीठा है।	अंगूर खट्टे हैं।
3)	लड़की अच्छी है।	लड़कियाँ अच्छी हैं।

आप देखेंगे कि यह वास्तव में विशेषण-विशेष्य का ही परिवर्तित रूप है। काला घोड़ा—घोड़ा काला (है)

ii) **कर्मपूरक अन्विति** (कर्म के लिंग वचन के अनुसार)

इसी तरह वाक्य में कर्म के पूरक शब्द की अन्विति कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होती है। जैसे:

1) आप यह कमीज़ छोटी कर दीजिए।
2) ठेकेदार ने मकान कच्चा बनाया।
3) दादी ने कहानी अच्छी सुनाई।

iii) **संज्ञा के साथ वर्तमान कालिक कृदंत** -ता और भूतकालिक कृदंत -या की अन्विति होती है—इसका प्रयोग विशेषण के रूप में होता है। जैसे:

-ता → भागता

1) भागता लड़का पकड़ा गया।
2) तैरता बच्चा पानी में डूब गया।
3) खेलता लड़का गिर गया।

-या → सोया

1) सोया बच्चा जाग गया।
2) टूटा पेड़ सूख गया।
3) रुका पानी निकल गया।

इन दोनों ही प्रकार के कृदंत रूपों में "भागता लड़का" और "सोया बच्चा" में "हुआ" क्रिया का प्रयोग वैकल्पिक है। वास्तव में इनके मूलरूप "भागता हुआ" और "सोया हुआ" है।

iv) **दो या अधिक कर्ताओं की लिंग की दृष्टि से क्रिया से अन्विति**

क) यदि सभी कर्ता एक ही लिंग के होंगे तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी, जैसे—

राम, मोहन और श्याम मेरी कक्षा में पढ़ते हैं।
शीला, कमला और रजनी मेरी कक्षा में पढ़ती हैं।

ख) अगर दो या अधिक कर्ता पुल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों हों तो क्रिया पुल्लिग बहुवचन में होगी, जैसे—

1) लड़के और लड़कियाँ खेल रहे हैं।
2) राम और सीता वन गए।
3) अप्राणिवाचक पदार्थों में लिंग की दृष्टि से क्रिया की अन्विति सबसे पास के कर्ता या कर्म से होती है, जैसे:
   1) रसोई में तीन गिलास और तीन थालियाँ रखी हैं।
   2) कमरे में दो स्टूल और एक मेज़ पड़ी है।

ग) अगर दो या अधिक कर्ताओं को 'दोनों', 'तीनों' या 'सब' जैसे शब्दों से संयोजित किया गया हो तो क्रिया पुल्लिग बहुवचन में होती है। लेकिन यदि सभी कर्ता

स्त्रीलिंग होंगे तो क्रिया स्त्रीलिंग होगी, जैसे–

1) इस दुकान पर फल और सब्ज़ियाँ दोनों मिलते हैं।
2) मोहन, शीला और राधा तीनों बाज़ार जाएँगे।
3) इस शपथ को बच्चे, बूढ़े और जवान सब पढ़ेंगे।

इस प्रकार आपने देखा कि वाक्य में अन्विति के विभिन्न रूप हैं। इस पाठ में हमने मुख्य अन्विति के क्षेत्रों की चर्चा की है। इनमें सबसे प्रमुख हैं–

1) कर्ता-क्रिया की अन्विति
2) कर्म-क्रिया की अन्विति
3) विशेषण विशेष्य की अन्विति
4) कर्तापूरक और कर्मपूरक की संज्ञा से अन्विति, तथा
5) भिन्न लिंग वाले कर्ताओं की क्रिया से अन्विति आदि।

अभ्यास 2

क) नीचे लिखी क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।

i) गिरना
ii) उठना
iii) करना
iv) सीखना
v) दौड़ना
vi) पीना
vii) सोना

ख) नीचे लिखे वाक्यों में प्रेरणार्थक वाक्यों पर सही (√) का और दूसरों पर गलत (×) का निशान लगाइए।

1) माँ ने बच्चों को खाना खिलाया।
2) मैंने अपनी किताबें निकालीं।
3) पिताजी ने हमें एक फ़िल्म दिखाई।
4) कंडक्टर ने लड़के को बस से उतारा।
5) उसने सामान उठाया।

नमूने के अनुसार वाक्य बदलिए।

नमना { नौकर ने खाना बनाया। (मैंने)
मैंने नौकर से खाना बनवाया।

1) कुली ने सामान उठाया। (पिताजी ने)
2) धोबी ने कपड़े धोए। (शीला ने)
3) आया ने बच्चे को सुलाया। (माँ ने)
4) हलवाई ने समोसे बनाए। (हमने)
5) शीला ने कल पत्र लिखा। (मेरे भाई ने)

घ) नमूने के अनुसार वाक्य बदलिए।

नमूना { लोग दक्षिण में चावल खाते हैं।
दक्षिण में चावल खाया जाता है।

1) दीवाली पर लोग मिठाई बाँटते हैं।
2) बंगाल में लोग मछली खाते हैं।
3) ईसाई लोग दिसंबर में क्रिसमस मनाते हैं।
4) उत्तर में लोग हिंदी बोलते हैं।

च) नीचे दिए वाक्यों में किस प्रकार की अन्विति है?

क) छोटा लड़का, अच्छी किताब

ख) लड़के मैदान में खेल रहे है।

ग) क्या तुमने मेरा मकान देखा है?

घ) रजनी और रमन मेरी कक्षा में पढ़ते हैं।

ङ) अंगूर खट्टे हैं।

16.6 सारांश

इस इकाई का उद्देश्य ऐसे शिक्षण बिंदुओं को सिखाना है जो हिंदी सीखने वाले के लिए कुछ कठिनाई पैदा करते हैं।

इस इकाई में सबसे पहले हमने सामान्य भूतकाल की संरचना के बारे में चर्चा की है। इसके अंतर्गत भूतकाल में क्रिया की रूपावली, क्रियाओं के अकर्मक, सकर्मक और द्विकर्मक पदों पर विचार किया तथा भूतकाल में अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया की वाक्य संरचनाओं का विवरण प्रस्तुत किया।

इस इकाई के दूसरे भाग में हमने प्रेरणार्थक क्रिया रूपों, और प्रेरणार्थक वाक्य संरचना का वर्णन किया तथा सामान्य वाक्यों से प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक वाक्य बनाने की पद्धति की चर्चा की। इसके साथ ही प्रेरणार्थक प्रतीत होने वाली द्विकार्यात्मक क्रियाओं का उल्लेख किया।

इस इकाई के तीसरे भाग में वाच्य संरचना पर विचार करते हुए कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य के अंतर को स्पष्ट किया और कर्तृवाच्य वाक्यों को कर्मवाच्य में रूपांतरित करने की विधि की चर्चा की। इसके अलावा यह भी स्पष्ट किया कि कर्मवाच्य वाक्यों में प्रायः कर्ता का लोप हो जाता है। इसके साथ ही सामर्थ्य सूचक और असमर्थता बोधक वाक्यों के निर्माण पर विचार किया। यह भी संकेत किया कि भाववाच्य में प्रायः निषेधात्मक वाक्यों का प्रयोग होता है।

चौथे भाग में हिंदी में विभिन्न स्थलों पर वाक्यों में जो अन्विति व्यवस्था है उसका सोदाहरण निरूपण किया।

16.7 शब्दावली

इस पाठ में आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली–

अकर्मक क्रिया	**अन्विति**
सकर्मक क्रिया	**गौण कर्म**
द्विकर्मक क्रिया	**मुख्य कर्म**
प्रेरणार्थक क्रिया	**प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक**
द्विकार्यात्मक क्रिया	**अप्रत्यक्ष प्रेरणार्थक**
कर्तृवाच्य	**कर्तालोप**
कर्मवाच्य	**सातत्य वर्तमान**
भाववाच्य	**अकर्तृवाच्य**

16.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) *हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण*, सूरजभान सिंह (1985) साहित्य सहकार, नई दिल्ली।

2) *हिंदी-पजाबी क्रिया पदबंध : व्यतिरेकी विश्लेषण* : भारत भूषण (1984) केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

3) *प्रयोजन मूलक हिंदी व्याकरण*, रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, शारदा भसीन (1983) केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

4) *हिंदी भाषा की संरचना*, तिवारी, भोलानाथ (1979) वाणी प्रकाशन, 61 एफ़, कमला नगर, दिल्ली।

16.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) 1. √ 4. ×
2. × 5. ×
3. √

ख) 1) वह सुबह जल्दी उठा।
2) माता जी ने चिट्ठी लिखी।
3) रमेश ने राकेश को रुपए दिए।
4) हमने होटल में खाना खाया।
5) राजेश ने दो साड़ियाँ खरीदीं।

अभ्यास 2

क) 1) गिरना → गिराना, गिरवाना
2) उठना → उठाना, उठवाना
3) करना → कराना, करवाना
4) सीखना → सिखाना, सिखवाना
5) दौड़ना → दौड़ाना, दौडवाना
6) पीना → पिलाना, पिलवाना
7) सोना → सुलाना, सुलवाना

ख) 1) √ 4) √
2) × 5) ×
3) √

ग) 1) पिता जी ने कुली से सामान उठवाया।
2) शीला ने धोबी से कपड़े धुलवाए।
3) माँ ने आया से बच्चे को सुलवाया।
4) हमने हलवाई से समोसे बनवाए।
5) मेरे भाई ने शीला से पत्र लिखवाया।

घ) 1) दीवाली पर मिठाई बाँटी जाती है।
2) बंगाल में मछली खाई जाती है।

3) दिसंबर में क्रिसमस मनाया जाता है।

4) उत्तर में हिंदी बोली जाती है।

च) क) विशेषण–विशेष्य (पुं.) विशेषण विशेष्य (स्त्री.)

ख) कर्ता-क्रिया अन्विति

ग) कर्म-क्रिया अन्विति

घ) पुंल्लिग + स्त्रीलिंग कर्ता-क्रिया अन्विति

ङ) कर्ता पूरक अन्विति

छ) 1) कर्ता-क्रिया के बीच

2) कर्म-क्रिया के बीच

3) विशेषण विशेष्य के बीच

4) सर्वनाम-सहायक क्रियाओं के बीच

इकाई 17 प्रोक्ति स्तर

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य
17.1 प्रस्तावना
17.2 प्रोक्ति की संकल्पना
  17.2.1 प्रोक्ति के प्रमुख अभिलक्षण
  17.2.2 प्रोक्ति के प्रमुख भेद
17.3 संलाप की संकल्पना
17.4 संलाप के प्रकार
  17.4.1 गत्यात्मक संलाप
  17.4.2 स्थिर संलाप
17.5 एकालाप की संकल्पना
17.6 एकालाप के प्रकार
  17.6.1 गत्यात्मक एकालाप
  17.6.2 स्थिर एकालाप
17.7 सारांश
17.8 शब्दावली
17.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
17.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- वाक्य स्तर (Syntactic level) और प्रोक्ति स्तर (Discourse level) में भेद कर पायेंगे,
- संप्रेषण की महत्वपूर्ण इकाई "प्रोक्ति" की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे,
- प्रोक्ति के प्रमुख अभिलक्षणों की चर्चा कर सकेंगे जिससे इसकी उपयोगिता सिद्ध हो सके,
- प्रोक्ति के प्रमुख प्रकारों का विवेचन कर सकेंगे,
- संलाप (dialogue) तथा एकालाप (monologue) का अंतर समझा सकेंगे,
- संलाप तथा एकालाप के प्रकारों की चर्चा कर सकेंगे,
- एकालाप तथा स्वगतकथन के संबंध को समझा सकेंगे।

इस प्रकार आप वाक्य से ऊपर की इकाई का विवेचन कर सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

आपने "वाक्य संरचना" खंड 3-4 के अंतर्गत वाक्य के बारे में विस्तार से अध्ययन किया तथा देखा कि भाषा में वाक्य एक महत्वपूर्ण इकाई है। बहुत से विद्वान तो वाक्य को ही भाषिक संरचना की सबसे बड़ी इकाई स्वीकार करते हैं। परन्तु हम इस तथ्य से परिचित हैं कि भाषा का काम न केवल एक के बाद एक वाक्य प्रस्तुत करना है बल्कि उसके माध्यम से कहे जाने वाले भाव को श्रोता तक पहुँचाना भी है, अर्थात् कही गई बात को संप्रेषित (Communicate) करना है। अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि श्रोता सामने हो। साथ ही जो बात वक्ता द्वारा कही जा रही है, वह श्रोता समझ ले तथा

उसका प्रत्युत्तर भी देने में समर्थ हो। अपनी बात को सही तथा सार्थक ढंग से कहने, श्रोता द्वारा उसे ठीक से समझने, फिर उसका सही जवाब देने की प्रक्रिया में एक से अधिक वाक्य सामने आते हैं जो आपस में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। इसी कारण दो लोगों के बीच संप्रेषण संभव भी हो पाता है। संप्रेषण की इस इकाई को ही प्रोक्ति कहा जाता है।

किसी बात को ठीक से संप्रेषित करने में "संदर्भ" (Context) की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। एक ही वाक्य संदर्भ में जाकर विभिन्न अर्थ देने लगता है। उदाहरण के लिए एक वाक्य देखिए जो संदर्भ में जाकर एक अलग अर्थ की प्रतीति कराता है–

वाक्य . "तुमने बहुत बढ़िया काम किया।"

यह वाक्य एक सामान्य कथन हो सकता है, जो किसी की प्रशंसा करते समय कहा जा रहा है। अब इसी वाक्य को एक संदर्भ में देखिए–

पिताजी : सोनू, क्या गिराया ?

सोनू : (घबराकर) पापा, क्रिस्टल का फूलदान.....

पिताजी : वाह बेटे! तुमने बहुत बढ़िया काम किया।

उपर्युक्त संदर्भ में रेखांकित वाक्य प्रशंसा न होकर व्यंग्य रूप में कहा गया वाक्य है, जो बच्चे की असावधानी की ओर संकेत करता है।

इसी प्रकार चोर के संदर्भ में "चोरी करना" उसकी दृष्टि से बढ़िया काम हो सकता है।

इस आधार पर संप्रेषण की सबसे बड़ी इकाई वाक्य को नहीं माना जा सकता, क्योंकि मात्र वाक्य के द्वारा संप्रेषण का पूरा कार्य-व्यापार सामने नहीं आ पाता, उसमें विचारों के आदान-प्रदान का होना आवश्यक है। इस पूरी प्रक्रिया का एक साथ अध्ययन करने के लिए हमें वाक्य से ऊपर की इकाई की कल्पना करनी पड़ेगी, जिसका संबंध संलाप (वार्तालाप) से हो। इसी के विषय में हम इस इकाई में विस्तार से पढ़ेंगे तथा देखेंगे कि वाक्य से ऊपर की इकाई, जिसे विद्वानों ने "प्रोक्ति" नाम दिया है–संप्रेषण के लिए किस प्रकार उपयोगी है? उसके कौन-कौन से ऐसे अभिलक्षण हैं, जो उसे वाक्य से ऊपर के स्तर की इकाई बनाते हैं? प्रोक्ति के कितने ऐसे रूप हैं, जिनमें हमारी भाषिक-अभिव्यक्तियाँ विभिन्न अर्थ पाती हैं?

इन सभी बिंदुओं पर आगे विस्तार से चर्चा की जाएगी तथा प्रोक्ति (discourse), संलाप (dialogue) तथा एकालाप (monologue) जैसी संकल्पनाओं को स्पष्ट किया जाएगा।

17.2 प्रोक्ति की संकल्पना

जैसा कि पीछे उल्लेख किया गया है–विचारों के आदान-प्रदान में एक प्रक्रिया जुड़ी रहती है। अर्थात् वक्ता द्वारा अपने विचारों को प्रकट करना तथा श्रोता द्वारा उसे सही अर्थ में समझकर उसका जवाब देना। भाषा का काम केवल शब्दों या वाक्यों को मात्र बोलना नहीं है बल्कि सार्थक अभिव्यक्ति के लिए बातचीत करना है। बातचीत तभी संभव है जब श्रोता वक्ता के संदेश को समझे, जो संदर्भ में अधिक स्पष्ट होता है। यहाँ संदर्भ से तात्पर्य है–

- कौन किससे बोल रहा है,
- किस समय बोल रहा है,
- कहाँ बोल रहा है,
- किस कारण बोल रहा है।

उदाहरण के लिए एक वाक्य देखिए–

"पाँच बज गए हैं।"

इसका सामान्य अर्थ समय की जानकारी देना है, लेकिन यदि इसे एक संदर्भ में रखकर देखा जाए, तो इसका अर्थ भिन्न हो जाता है। उदाहरण के लिए

(पति किसी मित्र से बातचीत करने में व्यस्त है)

पत्नी : सुनिए, पाँच बज गए हैं।

पति : बस, अभी चलते हैं।

यहाँ पत्नी वास्तव में यह कहना चाहती है कि "देर हो रही है"। अर्थात् यह संदेश वह अप्रत्यक्ष कथन के रूप में पति को दे रही है। पति इस संदेश को ग्रहण कर उसका जवाब उस संदेश के अनुकूल ही देता है। यहाँ अन्य संभावित प्रत्युत्तर भी हो सकते थे–

पत्नी : सुनिए, पाँच बज गए।

पति : i) तो मैं क्या करूँ? (संदर्भ को ठीक से न समझने पर)

ii) यह घड़ी तेज चल रही है। (अभी देर नहीं हुई)

iii) ठीक है। (बस, अभी चलते हैं)

उपर्युक्त उदाहरण में (ii) तथा (iii) वाक्य "देर हो रही है" के प्रत्युत्तर में ही कहे गए वाक्य हैं। मात्र कथन-शैली का भेद है।

यहाँ यह स्पष्ट है कि विचारों का आदान-प्रदान तभी हो सकता है जब वक्ता तथा श्रोता दोनों को संदर्भ की जानकारी हो, अन्यथा अटपटे एवं अस्वाभाविक उत्तर ही एक दूसरे को मिलेंगे। संदर्भ के अभाव में किस तरह की समस्या आती है इसका एक उदाहरण देखिए–

शीला (अपने पति से) : ड्राइवर से पूछिए कि राष्ट्रपति भवन कब तक पहुँचेंगे?

पति (ड्राइवर से) : राष्ट्रपति भवन अभी कितनी दूर है?

ड्राइवर : घबराइए मत साहब, इंडिया गेट पहुँचने पर वह दूर से ही दिखाई देने लगेगा।

वास्तव में संदर्भ यह है कि शीला को राष्ट्रपति भवन पहुँचना है लेकिन देर हो गई है। वह यह जानना चाहती है कि अभी वहाँ तक पहुँचने में कितना समय लगेगा। उसका पति इसी संदर्भ में ड्राइवर से यह जानना चाहता है कि राष्ट्रपति भवन पहुँचने में अभी और कितना समय लगेगा। परंतु ड्राइवर इस संदर्भ से परिचित नहीं है। वह सोचता है कि शायद वे लोग यह समझ रहे हैं कि वह राष्ट्रपति भवन का रास्ता नहीं जानता। इसलिए वह अपने रास्ते के ज्ञान को बताने के लिए कहता है–

"इंडिया गेट पहुँचने पर वह दूर से दिखाई पड़ जाएगा।" जबकि शीला का यह जानकारी लेना आवश्यक नहीं था। उसकी शंका का समाधान इस वाक्य से नहीं हुआ। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बातचीत के लिए संदर्भ का ज्ञान होना भी बहुत आवश्यक है।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि विचारों का आदान-प्रदान लिखकर भी हो सकता है तथा बोलकर भी। बोलते समय शारीरिक चेष्टाएँ (भाषेतर इकाइयाँ) भी भाषा के साथ जुड़ जाती हैं और अभिव्यक्ति को संप्रेषणीय (Communicable) बनाती हैं, जबकि लिखकर संदेश देते समय भाषेतर इकाइयों का कोई महत्व नहीं होता। उस हावभाव को लिपिबद्ध करना पड़ता है। उदाहरण के लिए एक वार्तालाप देखिए, जो मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति के स्तर पर किस प्रकार से भिन्न हो सकता है–

मौखिक वार्तालाप

अध्यापक : तुमने पाठ पढ़ लिया ?
(छात्र द्वारा सिर हिलाना)

अध्यापक : यह किसके बारे में है?

छात्र : जी, बालगंगाधर तिलक।
(अध्यापक द्वारा उँगली से बैठने का इशारा करना)

लिखित वार्तालाप

अध्यापक : तुमने पाठ पढ़ लिया ?

छात्र : जी, पढ़ लिया।

अध्यापक : यह किसके बारे में है ?

छात्र : जी, बालगंगाधर तिलक।

अध्यापक : ठीक है, बैठ जाओ।

इसी संदर्भ में यह भी उल्लेख करना ज़रूरी है कि संदेश चाहे लिखकर दिया जाए या बोलकर, इसका अपना एक "कोड" होता है, एक शैली होती है। जब हम किसी से बातचीत करते हैं तो आमतौर पर पूरे वाक्यों का कम प्रयोग करते हैं। इसका कारण यह है कि हर अगला वाक्य अपने पहले वाक्य से जुड़ा होता है। बातचीत करते समय बहुत से अंश अनुमान के आधार पर छोड़ दिए जाते हैं क्योंकि वहाँ उसका संदर्भ होता है। उदाहरण के लिए एक वार्तालाप देखिए :

क : शर्मा जी, आप कल आए नहीं ?

ख : जी, मैं बंबई चला गया था।

क : क्यों ?

ख : कुछ काम था।

क : अच्छा।

यहाँ तीसरा वाक्य देखिए। इसमें "क्यों" वास्तव में "आप बंबई क्यों चले गए थे" का अर्थ दे रहा है। इसी प्रकार "कुछ काम था" में "मुझे" वाक्य के प्रारंभ में अनुमानित किया जा सकता है।

इसके विपरीत सामान्य कथन में शैली बदल जाती है। वहाँ सभी वाक्यों का अपने में पूरा होना आवश्यक है। जैसे :

1) मैं आज रात को देर से आऊँगा।

2) मैं रात को खाना नहीं खाऊँगा।

3) मैं रात को पढ़ाई नहीं करूँगा। आदि।

हम इन्हीं वाक्यों को कथन के रूप में इस प्रकार नहीं कह सकते–

1) देर से।

2) नहीं खाऊँगा।

3) नहीं।

इस रूप में इनका पूरा अर्थ स्पष्ट नहीं होता। किसी संदर्भ में लाकर इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ सही अर्थ दे सकती हैं लेकिन संदर्भ से कट कर नहीं। अब इन्हीं अभिव्यक्तियों को एक संदर्भ में लाकर देखिए–

अ : तुम रात को कब आओगे ?

ब : देर से

अ : क्या आकर खाना खाओगे ?

ब : नहीं खाऊँगा।

अ : पढ़ाई करोगे या नहीं ?

ब : नहीं

इस विवेचन के आधार पर आइए देखें कि प्रोक्ति की संकल्पना को हम समझ पाए या नहीं। ऊपर की गई चर्चा को यदि हम सार रूप में कहना चाहें तो प्रोक्ति को इस प्रकार समझा सकते हैं।

"प्रोक्ति किसी संदेश को संप्रेषित करने वाली वाक्य से ऊपर की वह इकाई है जिसका आधार संलाप होता है। विचारों के आदान-प्रदान के लिए यह एक से अधिक वाक्यों की कड़ी के रूप में सामने आता है क्योंकि सभी वाक्य एक दूसरे से जुड़ने पर ही एक विशेष संदर्भ में सार्थकता पाते हैं। अर्थात् उन सबके बीच एक व्यवस्था का होना आवश्यक होता है।"

17.2.1 प्रोक्ति के प्रमुख अभिलक्षण

प्रोक्ति के संबंध में की गई उपर्युक्त चर्चा के आधार पर हम निम्नलिखित तथ्यों का उल्लेख कर सकते हैं–

1) जिस प्रकार वाक्य शब्दों के समूह से बनता है, उस प्रकार प्रोक्ति वाक्यों के समूह से बनती है। इसीलिए इसे वाक्य से ऊपर की इकाई माना गया है।

2) सभी वाक्यों का आपस में संबंध होना आवश्यक है। यदि वाक्यों के बीच पूर्वापर संबंध नहीं है तो उसे प्रोक्ति का उदाहरण नहीं माना जा सकता।

3) वक्ता/लेखक द्वारा बोला गया वाक्य सार्थक होना चाहिए जिसका अर्थ या भाव ग्रहण कर श्रोता/पाठक उत्तर दे सके। निरर्थक वाक्यों का प्रोक्ति में स्थान नहीं होता। अर्थात् जिस अभिव्यक्ति से विचारों का आदान-प्रदान न हो, उसे प्रोक्ति नहीं माना जा सकता।

4) प्रोक्ति का स्वरूप उसके आकार से निर्धारित नहीं होता, बल्कि उसके प्रकार्य से निर्धारित होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रोक्ति अपने आप में पूर्ण होती है। इसका संबंध एक शब्द, एक वाक्य, पूरी एक घटना, प्रसंग या पूरे जीवनवृत्त से हो सकता है।

5) प्रोक्ति की संरचना का आधार संलाप होता है। इसीलिए संलाप को प्रोक्ति की सार्थक इकाई स्वीकार किया जाता है।

6) प्रोक्ति में संप्रेषणीयता का तत्व विद्यमान रहता है, जो संदर्भ (context) की माँग करता है। यहीं संदर्भ वक्ता/लेखक और श्रोता/पाठक के कथन या संदेश को एक दूसरे से जोड़ता है।

7) संप्रेषण की इकाई होने के कारण प्रोक्ति संदेश को श्रोता तक केवल पहुँचाती ही नहीं, बल्कि श्रोता की प्रतिक्रिया को वक्ता तक भी पहुँचाती है। इसके कारण ही संलाप की स्थिति बन पाती है। वास्तव में संप्रेषण का सशक्त और स्वाभाविक माध्यम संलाप है।

8) प्रोक्ति के माध्यम से विचारों को विभिन्न रूपों में तथा तर्क संगत ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

9) किसी संप्रेषण प्रक्रिया में वक्ता/लेखक, श्रोता/पाठक, संदेश, संदर्भ, अभिव्यक्ति के मौखिक/लिखित रूप तथा कोड का होना अनिवार्य है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि "भाषिक संप्रेषण की इकाई प्रोक्ति है।"

17.2.2 प्रोक्ति के प्रमुख भेद

पीछे यह बताया गया कि प्रोक्ति में संवाद की स्थिति हमेशा बनी रहती है क्योंकि इसका संबंध भाषा-व्यवहार से है। यह भाषा व्यवहार एक ओर तो दो या दो से अधिक लोगों के बीच होता है, जिसे संलाप कहते हैं, दूसरी ओर एकालाप की स्थिति भी हो सकती है जहाँ अभिव्यक्ति के स्तर पर एक ही व्यक्ति वक्ता और श्रोता का कार्य करता है। आमतौर पर भावावेश की स्थिति में एकालाप का स्वरूप सामने आता है। अतः मोटे तौर पर प्रोक्ति के दो प्रमुख भेद किए जा सकते हैं :

1) संलाप

2) एकालाप

संलाप और एकालाप के दो-दो उपभेद वक्ता और श्रोता की भूमिकाओं के आधार पर भी किए जाते हैं–

1) संलाप
   - i) गत्यात्मक संलाप
   - ii) स्थिर संलाप

2) एकालाप
   - i) गत्यात्मक एकालाप
   - ii) स्थिर एकालाप

स्थिर संलाप के भी विद्वानों ने आगे दो उपभेद किये हैं:

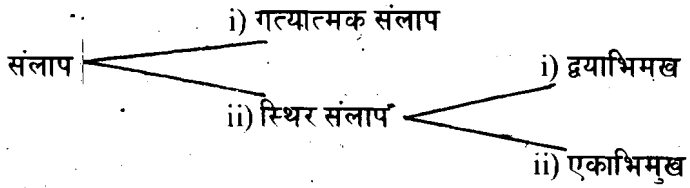

अब हम प्रोक्ति के इन सभी भेदों-उपभेदो पर एक-एक करके विस्तार से चर्चा करेंगे।

17.3 संलाप की संकल्पना

जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है कि सभी प्रकार के भाषा-व्यवहार संलाप के अंतर्गत आते हैं। भाषा-व्यवहार के लिए कम से कम दो व्यक्तियों का होना अनिवार्य है, अर्थात् विचारों का आदान-प्रदान दो पात्रों के बीच ही संभव है। इस आधार पर कहा जा सकता है :

"संलाप भाषा व्यवहार की वह इकाई है जिसमें कम से कम दो पात्रों के बीच विचारों का परस्पर आदान-प्रदान होता है।"

उपर्युक्त परिभाषा में तीन मुख्य बिंदु हैं–

i) वक्ता तथा श्रोता की विद्यमानता

ii) संदेश या विचार

iii) विचारों का आदान-प्रदान

अर्थात् किसी भी संदेश या विचार को संप्रेषित करने के लिए वक्ता तथा श्रोता की विद्यमानता ज़रूरी है। साथ ही, जो कुछ कहा जा रहा है उसे दोनों का समझना भी आवश्यक है, नहीं तो विचारों का आदान-प्रदान नहीं हो सकेगा तथा संप्रेषण में बाधा उत्पन्न होगी। इन दोनों स्थितियों को देखिए.

क) माँ : बेटा, क्या कर रहे हो ?

बेटा : स्कूल का काम कर रहा हूँ, माँ।

माँ : बहुत देर हो गई है।

बेटा : अभी पाँच मिनट में सोता हूँ।

यहाँ विचारों का आदान-प्रदान सहज रूप में हो रहा है। माँ द्वारा "बहुत देर हो गई है" का अर्थ बच्चे ने ठीक ही लिया कि माँ उसे सोने के लिए कह रही है। इसी आधार पर वह उत्तर भी देता है।

परन्तु एक अन्य स्थिति देखिए, जहाँ संप्रेषणीयता मे व्यवधान उपस्थित हो रहा है–

व्यक्ति : क्या चाय में चीनी डाली है ?

चायवाला : चीनी कम [illegible] साब ?

व्यक्ति : नहीं भाई, मुझे बिना चीनी की चाय चाहिए।

चायवाला : ओह मैं समझा चीनी और चाहिए।

यहाँ व्यक्ति और चायवाले के अनुभवों में समानता नहीं है, इसलिए संप्रेषण में कठिनाई पैदा हो रही है। उस व्यक्ति के लिए बिना चीनी की चाय पीना सामान्य बात है जबकि चायवाले की कल्पना में यह विचार सहज रूप में नहीं आता इसलिए "क्या चाय में चीनी डाल दी" पूछे जाने पर वह सहज ही यह सोच लेता है कि "शायद चीनी कम है।"

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि सलाप में वक्ता तथा श्रोता के अनुभवों में साम्य होना ज़रूरी है अथवा कभी-कभी तो ऐसा होता है कि संप्रेषण हो ही नहीं पाता, एक वार्तालाप देखिए :

माँ (बच्चे से, गुस्से से) : क्यों सिर पर खड़े हो ? जाकर सो जाओ।

बच्चा (हँसते हुए) : मैं सिर पर कहाँ खड़ा हूँ, मैं तो ज़मीन पर खड़ा हूँ।

माँ : चुप रहो, मेरे कान मत खाओ।

बच्चा : (और ज़ोर से हँसकर) कहीं कान भी खा सकते हैं?

माँ : हे भगवान !

माँ तो स्वाभाविक रूप से इन मुहावरेदार अभिव्यक्तियों का यहाँ प्रयोग कर रही है लेकिन छोटा बच्चा मुहावरों का अर्थ शाब्दिक रूप में ही ग्रहण कर पा रहा है, अतः बात को नहीं समझ पा रहा, जिससे विचारों का आदान-प्रदान हो ही नहीं पा रहा।

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विचारों के आदान-प्रदान के लिए वक्ता श्रोता के बीच मानसिक स्तर पर भी साम्य होना ज़रूरी है।

17.4 संलाप के प्रकार

वक्ता तथा श्रोता की भूमिकाओं के आधार पर संलाप के दो उपभेद किए गए हैं–

(i) गत्यात्मक संलाप तथा (ii) स्थिर संलाप

17.4.1 गत्यात्मक संलाप

इसमें वक्ता तथा श्रोता संदेश को समझने तथा उस पर अपनी राय देने, पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने आदि में सक्रियता से भाग लेते हैं, जिससे संलाप आगे बढ़ता है। यदि सक्रियता न हो तो संलाप आगे बढ़ ही नहीं सकता। साथ ही इसमें वक्ता तथा श्रोता की भूमिका बदलती रहती है। अर्थात् वक्ता कुछ कहता है, श्रोता सुनकर जवाब देता है, तब श्रोता वक्ता की भूमिका में आ जाता है और उसकी बात को सुनने के कारण पहला वक्ता श्रोता की भूमिका में। पीछे गत्यात्मक संलाप के कई उदाहरणों की चर्चा की जा चुकी है।

17.4.2 स्थिर संलाप

गत्यात्मक संलाप की तुलना में स्थिर संलाप में श्रोता की भूमिका सक्रिय नहीं होती अर्थात् वक्ता तो सक्रिय रूप से भाग लेता है, परन्तु वक्ता की तुलना में श्रोता निष्क्रिय ही रहता है। वह अपने विचार उस रूप में प्रकट नहीं करता जिससे संलाप आगे बढ़ सके। साथ ही, इस प्रकार के संलाप में वक्ता तथा श्रोता की भूमिकाएँ भी नहीं बदलतीं। इस प्रकार का संलाप आमतौर पर औपचारिक संदर्भों में देखा जा सकता है।

औपचारिकता की स्थिति के अनुसार भी इसके दो उपभेद और किए गए हैं–

(1) द्वयाभिमुख तथा (2) एकाभिमुख

1) द्वयाभिमुख स्थिर संलाप

इस स्थिति में वक्ता और श्रोता दोनों का होना आवश्यक तो है, परन्तु उनकी भूमिकाएँ नहीं बदलतीं। अर्थात् वक्ता अपनी बात तो कहता है परन्तु श्रोता उसका जबाव देने के लिए वक्ता नहीं बनता। वह केवल अपने हावभावों, चेहरे के भावों आदि के द्वारा अपनी उपस्थिति प्रकट करता है। वह किसी प्रकार का भाषिक व्यवहार वक्ता से क्रिया-प्रतिक्रिया या संवाद को आगे बढ़ाने के लिए नहीं करता। इसमें वक्ता ही पूर्ण रूप से सक्रिय रहता है। इस स्थिति को समझने के लिए कुछ उदाहरण लीजिए–

मान लीजिए आप कोई नाटक देखने किसी थियेटर में गए। वहाँ वक्ता के रूप में मंच पर उपस्थित कलाकार हैं तथा श्रोता के रूप में आप जैसे दर्शक। अब मंच पर तो वक्ता पूर्ण रूप से सक्रिय रहेंगे। वे नाटक आपके समक्ष प्रस्तुत करेंगे, नाटक का संदेश आप तक पहुँचाना चाहेंगे। अगर दर्शकों को नाटक अच्छा लगेगा तो वे तालियाँ बजाकर अपने भाव प्रकट करेंगे। नाटक खत्म होने पर उठकर कलाकारों का स्वागत भी करेंगे। उनकी अधिक तारीफ़ करने के लिए अधिक देर तक तालियाँ बजाकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे आदि।

अब ऊपर कही गई बात पर ध्यान दीजिए। इस स्थिति में वक्ता तथा श्रोता दोनों हैं परन्तु एक-एक पात्र के रूप में नहीं बल्कि सभी कलाकार मिलकर एक इकाई बनते हैं तथा सभी दर्शक मिलकर दूसरी इकाई। जो कुछ नाटक के माध्यम से कहा जा रहा है वह संवाद तो है, पर वहाँ संवाद की स्थिति मंच पर उपस्थित वक्ताओं के बीच है। श्रोता के रूप में दर्शक उसमें सक्रिय भाग नहीं ले सकते क्योंकि यह स्वतंत्र वार्तालाप की स्थिति नहीं है। यही कारण है कि इस प्रकार की स्थिति में श्रोता को वक्ता के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए नहीं देखा जा सकता। हाँ, इस स्थिति में दर्शक मंच पर उपस्थित वक्ता/वक्ताओं के साथ जुड़ा हुआ अवश्य रहता है।

2) एकाभिमुख स्थिर संलाप

इससे मिलती-जुलती एक स्थिति की और कल्पना कीजिए जहाँ यह आवश्यक नहीं कि नाटक की भाँति वक्ता तथा श्रोता के बीच तादात्म्य स्थापित हो ही जाए। यह बिल्कुल संभव है कि वक्ता सक्रिय रहे और श्रोता मात्र औपचारिकतावश वहाँ बैठा हो तथा वह किसी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त न करे। आमतौर पर मंच पर दिए जाने वाले भाषणों आदि में इस प्रकार की स्थिति हो सकती है। खासतौर पर किसी औपचारिक समारोह में दिए गए भाषण, जिसमें उसे सुनने आदि के अलावा अपनी प्रतिक्रिया देने का मौका नहीं दिया जाता।

इसी के साथ संगोष्ठियों तथा कक्षा की स्थिति को लीजिए जिसमें एक पक्ष (वक्ता) तो सक्रिय रहता ही है पर उस संगोष्ठी में उपस्थित श्रोता एवं कक्षा के छात्र उतने निष्क्रिय नहीं होते जितने ऊपर बताई गई उन स्थितियों के श्रोता रहते हैं। इसमें तो श्रोता प्रश्न पूछ सकता है, टिप्पणी कर सकता है तथा वक्ता को बीच में रोक कर भी अपनी जिज्ञासा प्रकट कर सकता है। कक्षा की स्थिति में तो कई बार अध्यापक ही विद्यार्थियों को कुछ बोलने के लिए उकसाते हैं तथा उनसे बीच-बीच में प्रश्न पूछकर उस चर्चा में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं।

अब यहाँ आपके मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इस तीसरी स्थिति में यदि श्रोता वक्ता के साथ भाग ले सकता है तो फिर संलाप और स्थिर संलाप में क्या अंतर हुआ? अगर आप ध्यान से इस पर विचार करें तो आप पायेंगे कि संलाप में तो वक्ता और श्रोता आपस में बातचीत करते हुए संवाद को आगे बढ़ाते हैं। वक्ता कुछ कहता है, श्रोता उसे सुनकर वक्ता के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। अर्थात् श्रोता वक्ता बन जाता है और वक्ता श्रोता की भूमिका में आ जाता है। इस प्रकार एक बात आगे बढ़ती चली जाती है। एक नमूना देखिए–

रोहित	– कल मैं ऑफ़िस नहीं आऊँगा। (वक्ता)
अजय	– क्यों क्या बात है? (श्रोता-वक्ता)
रोहित	– कल मेरे पिताजी विदेश से लौट रहे हैं, इसलिए घर पर रहना चाहता हूँ। (श्रोता-वक्ता)
अजय	– कितने दिन की छुट्टी ले रहे हो? (श्रोता-वक्ता)
रोहित	– बस एक दिन। (श्रोता)

ध्यान दीजिए–ऊपर के श्रोता-वक्ता अपनी भूमिकाएँ बदल कर ही संवाद को आगे बढ़ाने में सफल हुए हैं। इस स्थिति में हम पहले से कल्पना नहीं कर सकते कि भूमिकाएँ बदलने पर वक्ता-श्रोता किस प्रकार की प्रतिक्रिया देंगे। हाँ, यदि हम संभावना करना चाहें तो कई विकल्प हमारे सामने होंगे। उदाहरण के लिए ऊपर के उदाहरण का पहला और दूसरा संवाद लीजिए–

रोहित : कल मैं ऑफिस नहीं आऊँगा।

अजय : क्यों क्या बात है ?

अब यदि आप संभावना करना चाहें तो कई उत्तर इस प्रश्न के जवाब में सोच सकते हैं। जैसे–

रोहित : i) मैं कहीं बाहर जा रहा हूँ।

ii) मैं आराम करना चाहता हूँ।

iii) कुछ लोग घर पर आ रहे हैं

iv) मेरी तबियत ठीक नहीं है.....आदि-आदि।

अर्थात् संलाप किसी सीमा से बंधा नहीं होता। यह तो वक्ता-श्रोता की मानसिक स्थिति, प्रसंग तथा उसकी अभिव्यक्ति की शैली पर निर्भर करता है कि वे बातचीत कैसे आगे बढ़ाते हैं। यहाँ बातचीत का संदर्भ पहले से निश्चित नहीं होता।

इसके विपरीत स्थिर संलाप में, खासतौर पर कक्षा जैसी स्थिति में वार्तालाप संभव तो है परन्तु वहाँ बातचीत का संदर्भ वक्ता द्वारा पहले से निश्चित होता है अध्यापक (वक्ता) जानता है उसे क्या कहना है। उसी से संबंधित प्रश्न पूछने की छूट विद्यार्थियों को होती है परन्तु वह बातचीत की तरह क्रमिक रूप से आगे नहीं बढ़ती। यह संभव है कि अध्यापक कुछ समझा रहा हो और वह केवल अपनी बात खत्म करके विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया जानना चाहे। यह भी हो सकता है कि कुछ समझाकर बीच में एक प्रश्न करे या विद्यार्थियों से प्रतिक्रिया व्यक्त करने को कहे। एक नमूना देखिए–

अध्यापक : बच्चों, तुम सबने "प्रदूषण" शब्द तो सुना ही है। आजकल प्रदूषण की समस्या इतनी भयानक हो गई है कि हम अब स्वच्छ वायु की कल्पना भी नहीं कर सकते। कभी-कभी तो धुएँ से भरी सड़कों पर साँस लेना भी कठिन हो जाता है। चारों तरफ़ मोटर-गाड़ियों के शोर में कान के पर्दे भी फटने लगते हैं। तुम जानते हो रमेश, वायु प्रदूषण की तरह "ध्वनि प्रदूषण" भी होता है।

रमेश : जी, हर प्रकार के शोर को ध्वनि प्रदूषण कह सकते हैं।

यहाँ वार्तालाप की स्थिति नही है। अध्यापक पहले से जानता है कि उसे कितना और क्या विद्यार्थियों को पढ़ाना है। बस, बीच-बीच मे या पाठ समाप्त करके वह कुछ शंकाओं का समाधान करता है जिससे छात्रों को भी सक्रिय होने का अवसर मिलता रहे।

इस प्रकार हम स्थिर संलाप में मंचीय भाषण, नाटक आदि तथा कक्षा की अध्ययन-अध्यापन जैसी स्थितियों को ले सकते हैं, जहाँ कही जाने वाली बात पहले से निश्चित होती है और जिसका संदर्भ हमेशा औपचारिक होता है। हाँ, औपचारिकता की मात्रा में अंतर हो सकता है। जैसे :

मंच पर भाषण प्रस्तुत करने वाले वक्ता तथा श्रोता की स्थिति अध्यापक तथा विद्यार्थी की तुलना में अधिक औपचारिक होती है।

इसी संदर्भ में रेडियो तथा दूरदर्शन आदि से प्रसारित होने वाले समाचार जैसे अन्य कार्यक्रमों की भी स्थिर संलाप के अंतर्गत चर्चा की जाती है। इसमें वक्ता श्रोता आमने-सामने तो नहीं होते परन्तु इसके पीछे उद्देश्य तो यही रहता है कि जो कुछ कहा जाए वह श्रोता/दर्शकों तक पहुँचे। इस स्थिति में तो श्रोता/दर्शक बिल्कुल ही निष्क्रिय रहता है क्योंकि वक्ता के सामने न रहने पर वह शंकाओं का समाधान नहीं कर सकता, या अपनी बात भी नहीं कह सकता। यहाँ तो वक्ता ही अपनी बात इस तरह से प्रस्तुत करता है जिससे वह अपना कथ्य स्पष्ट करता चले, भले ही उसे श्रोता/दर्शक उस समय या बाद में समझ पायें या नहीं।

अभ्यास 1

क) नीचे दिए गए कुछ कथन सही हैं तथा कुछ गलत। सही के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए–

1) संप्रेषण की सबसे बड़ी इकाई वाक्य है। सही गलत

2) संप्रेषण में "संदर्भ" का भी महत्वपूर्ण स्थान है। सही गलत

3) हर संदेश का अपना एक कोड होता है। सही गलत

4) प्रोक्ति का स्वरूप उसके आकार से निर्धारित होता है। सही गलत

5) प्रोक्ति की संरचना का आधार संलाप होता है। सही गलत

6) स्थिर संलाप में वक्ता और श्रोता की भूमिकाएँ बदलती रहती हैं।सही गलत

ख) नीचे दिए गए प्रश्नों के 5-6 वाक्यों में उत्तर दीजिए–

1) प्रोक्ति से क्या तात्पर्य है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) किसी बात को संप्रेषित करने में "संदर्भ" का क्या महत्व होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) मौखिक तथा लिखित वार्तालाप में प्रमुख भेद क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) संलाप का प्रोक्ति से क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) स्थिर संलाप तथा गत्यात्मक संलाप में मूलभूत अंतर क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

17.5 एकालाप की संकल्पना

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है–इसमें वक्ता किसी संदर्भ विशेष में स्वयं से बातचीत करता है, अर्थात् स्वयं से कुछ कहता है तथा स्वयं ही उसका उत्तर देता है। इस प्रकार एक ही व्यक्ति वक्ता तथा श्रोता की भूमिका निभाता है।

एकालाप को प्रोक्ति के अंतर्गत रखने का एक प्रमुख कारण यह है कि इसमें भी वक्ता तथा श्रोता की सत्ता बनी रहती है, किन्तु जहाँ तक श्रोता/दर्शक का संबंध है वह अलग से वहाँ नहीं होता, बल्कि स्वयं वही व्यक्ति इस भूमिका को निभाता है।

एकालाप को प्रोक्ति के अंतर्गत रखने की आवश्यकता इसलिए भी है कि जीवन में बहुत से संदर्भ ऐसे दिखाई देते हैं जहाँ भावावेश में व्यक्ति स्वयं से कुछ कहने लगता है तथा स्वयं को जवाब भी देता है अर्थात उत्तर-प्रत्युत्तर स्वयं करता है। एक उदाहरण देखिए–

"इतने बड़े अपशकुन को यह कितने सहज ढंग से कहे डाल रहे हैं। यह कहते हैं, कल से मान लो..... .....मान लो कि भली चलाई। और अपने ही पक्ष में क्यों मानते हैं? क्या एसा मान लो, मेरे पक्ष में नहीं हो सकता? हो सकने की बात ही क्या है, उसे तो कभी का ही हो जाना चाहिए था।.....इन हड्डियों में अब क्या रह गया है? बाँसी की तरह खोखली हो गई हैं। इन्हें क्या मालूम? ब्याह के बाद से घड़ी भर भी कभी चैन नहीं मिला। कोई कहाँ तक खट सकता है?" (यह पथ बंधु था; नरेश मेहता)

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि जो बात वक्ता कह रहा है वह स्वयं ही सुन रहा है। वास्तव में वह स्वयं को संबोधित करके ही बात को कह रहा है। अपने सोचने और कहने के बीच के अंतर को वह स्वयं भरता चलता है। यहाँ उसके मन में कभी संदर्भ को ठीक से न समझने का प्रश्न ही नहीं उठ सकता क्योंकि सब कुछ उसके ही अनुभव जगत से जुड़ा हुआ है।

17.6 एकालाप के प्रकार

वक्ता की विचारधारा में अंतर को देखते हुए एकालाप के भी दो उपभेद किए जा सकते हैं–

1) गत्यात्मक एकालाप
2) स्थिर एकालाप

17.6.1 गत्यात्मक एकालाप

इस प्रकार के एकालाप में वक्ता तो एक ही होता है लेकिन वह स्वयं से प्रश्न करता है तथा स्वयं ही उसका उत्तर या समाधान भी देता चलता है। अर्थात् जहाँ संलाप में वक्ता और श्रोता बातचीत को उत्तर-प्रत्युत्तर के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं, वहाँ एकालाप में वक्ता ही स्वयं वक्ता-श्रोता की भूमिका बदलता हुआ अपने विचारों को आगे बढ़ाता है। इसीलिए इस प्रकार के एकालाप को "गत्यात्मक" कहा गया है क्योंकि गत्यात्मक संलाप के समान इसमें भी वक्ता श्रोता की भूमिकाएँ बदलती हुई दिखाई देती हैं। नमूने के तौर पर एक अंश देखिए–

"कौन जाने कल क्या हो? कल त्याग पत्र देने के बाद कौन जानता है क्या होगा? संभव है यहाँ रहना न हो। तब क्या होगा? क्या कहीं बाहर जाया जाएगा? क्या पता? सरो, गुणवंती, सुशीला, देवव्रत का क्या होगा? नहीं, यह नहीं हो सकता कि ये लोग अनाथ हो जाएं। लेकिन माँ हैं ही। पिता चाहे अनासक्त हों, लेकिन माँ उन्हें अभी भी संबंधों से घेरे हुए हैं।"

(यह पथ बंधु था)

ध्यान दीजिए, उपर्युक्त अनुच्छेद को पढ़कर ऐसा लगता है मानो दो व्यक्ति बातें कर रहे हों और वार्तालाप को आगे बढ़ा रहे हों। अब हम यहाँ उपर्युक्त अनुच्छेद को दो लोगों के बीच होने वाले वार्तालाप के रूप में प्रस्तुत करेंगे तथा ऊपर कही गई बात को सिद्ध करने का

प्रयास करेंगे कि गत्यात्मक एकालाप में भी वक्ता-श्रोता (जो वास्तव में एक ही व्यक्ति हैं) की भूमिकाएँ बदलती हुई दिखाई देती हैं–

1) क : कौन जाने कल क्या हो ?

2) ख : कल त्याग-पत्र देने के बाद कौन जानता है क्या होगा?

3) क : संभव है यहाँ रहना न हो। तब क्या होगा? क्या कहीं बाहर जाया जाएगा?

4) ख : क्या पता ?

5) क : सरो, गुणवंती, सुशीला, देवव्रत का क्या होगा?

6) ख : .....

7) क : नहीं, यह नहीं हो सकता कि ये लोग अनाथ हो जाएँ।

8) ख : .....

9) क : लेकिन माँ हैं ही। पिता चाहे अनासक्त हों, लेकिन माँ उन्हें अभी भी संबंधों से घेरे हुए हैं।

उपर्युक्त वार्तालाप में स्पष्ट रूप से वक्ता और श्रोता की भूमिकाएँ बदलती हुई दिखाई दे रही है। वाक्य 1, 3, 5 में वक्ता अपने "मन" से ही प्रश्न करता है। वाक्य 2, 4 में उसका "मन" स्वयं उस प्रश्न का समाधान न देकर एक विकल्प खड़ा करता है जिससे वक्ता के मन में शंकाएँ उठती हैं। वाक्य 6, 8 बिना शब्दों के रखे गये हैं जिसका तात्पर्य है कि "मन" वक्ता द्वारा पूछे गए प्रश्न पर किसी अप्रिय घटना की संभावना करके बोलता नहीं जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है–एकालाप में इस प्रकार की स्थितियाँ कई बार आती हैं क्योंकि वक्ता स्वयं इन स्थितियों के बीच रहता है तथा अपने विचार तथा अभिव्यक्ति के अंतर को वह स्वयं परता चलता है। वाक्य 9 में वक्ता स्वयं अपने को आश्वासन देता हुआ अपने द्वारा उठाई गई "त्याग पत्र देने की" समस्या का समाधान खोज लेता है।

17.6.2 स्थिर एकालाप

गत्यात्मक एकालाप की तुलना में स्थिर एकालाप में वक्ता स्वयं से प्रश्न नहीं करता बल्कि जिस विषय पर अपने भाव प्रकट करता है वे क्रम से एक के बाद एक स्थिर विचार के रूप में आते चलते हैं। उदाहरण के लिए एक नमूना देखिए–

"सरो सवेरे से देर रात ऐसे ही, बस ऐसे ही बिताती रहती है। उस पर भी किसी को दर्द नहीं। दिनभर पलँग पर बैठकर पान खाते हुए, हुकम चलाते हुए भाभी को यह दर्द नहीं कि अब तो तीसरा पहर हो गया। खुद तो जाने क्या-क्या दवाइयों के नाम पर खा-पी लेती हैं तो भूख नहीं लगती. लेकिन इस बे-टके की चाकर को तो भूख लग सकती है न?"

(यह पथ बंधु था)

यहाँ आपके मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इसे स्वगत कथन न कहकर स्थिर एकालाप क्यों कहा गया है? वास्तव में इन दोनों में कोई सिद्धांत रूप में विरोध नहीं है। बस, अंतर केवल इतना ही है कि नाटकों/एकांकियों में स्वगत कथन की स्थिति होती है, जहाँ पात्र भावावेश में जो सोचता है उसे दर्शकों के सामने उजागर करने के लिए उसे बोलता है। पर वास्तव में यह सुनाने के लिए नहीं होता। आमतौर पर मंच पर इन स्थितियों को वक्ता थोड़ा धीरे बोलकर या मुँह पर हाथ की ओट करके बोलता है, जिससे दर्शक यह जान सकें कि कहा गया कथन "स्वगत कथन" है। एक नमूना देखिए–

तीसरा दृश्य

(वही बरामदा–पर्दा उठने पर बेला आकुलता से बरामदे में घूमती हुई दिखाई देती है–एक हाथ में पुस्तक है।)

बेला : (अपने आप से) मैं किन लोगों में आ गई हूँ। ये कैसे लोग है.....आज कुछ हैं, कल कुछ। (फिर सोचती हुई धीरे-धीरे घूमती है)। गर्म होते हैं तो आग बन जाते हैं और नरम होते हैं तो मोम से भी कोमल दिखाई देते हैं। आज जिस बात को बुरा कहते हैं, कल उसी की प्रशंसा करते हैं–मैं तो तंग आ गई हूँ।"

(सूखी डाली : उपेन्द्रनाथ अश्क)

इस संदर्भ में यह स्पष्ट है कि पात्र द्वारा बोला गया "स्वगत कथन" अपने लिए ही होता है, वह अपनी व्याकुलता को अपने प्रति ही प्रकट करता है। इस प्रकार स्वगत कथन और एकालाप लगभग एक से ही हैं। पर इन दोनों में सूक्ष्म अंतर यही है कि स्वगत कथन वास्तव में किसी को सुनाने के लिए नहीं होता। यह तो किसी पर भावावेश में की गई टिप्पणी होती है जबकि एकालाप में पात्र अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए जो स्वयं से कहता है या बातें करता है, वह एकालाप कहलाता है। संक्षेप में: "एकालाप" से तात्पर्य है–स्वयं से बातचीत करना, जिसमें व्यक्ति स्वयं वक्ता तथा श्रोता हो। 'स्वगत कथन' से तात्पर्य है–अपने आपसे कुछ इस प्रकार कहना जिसे कोई सुन न सके। इसमें केवल वक्ता ही सक्रिय रहता है, श्रोता/दर्शक नहीं।

अभ्यास 2

क) नीचे दिए गए कुछ कथन सही हैं, कुछ गलत। सही के आगे(√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए–

1) एकालाप को प्रोक्ति के अंतर्गत नहीं रखा जाता। सही गलत

2) स्वगत कथन और स्थिर एकालाप में कोई अंतर नहीं होता। सही गलत

3) एकालाप में व्यक्ति स्वयं वक्ता तथा श्रोता होता है। सही गलत

4) स्थिर संलाप में वार्तालाप बिल्कुल संभव नहीं है। सही गलत

5) प्रोक्ति का स्वरूप उसके प्रकार्य से निर्धारित होता है। सही गलत

ख) अन्तर स्पष्ट कीजिए। (8-10 पंक्तियों में)

1) स्थिर संलाप तथा गत्यात्मक संलाप

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्थिर एकालाप तथा गत्यात्मक एकालाप

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) स्थिर एकालाप तथा स्वगत कथन

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) संलाप तथा एकालाप

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ग) नीचे कुछ प्रोक्ति के उदाहरण दिए जा रहे हैं। दिए गए संकेतों के आधार पर सही विकल्प लिखिए–

1) – मगो।

– जी।

– तुम क्या सोचती हो ?

– किस बारे में ? क्या इतिहास के बारे में ?

– हाँ।

– न बदलने के पीछे कुछ कारण होंगे ही, तभी न आप ऐसा कर रहे हैं।

– मेरे इस निर्णय पर तुम्हें संतोष है ?

– यदि आपको हो तो।

(यह पथ बंध था।)

दृश्य 2

2) (पर्दा खुलता है। गुणवंती परेशानी से इधर-उधर घूम रही है। फिर वह कभी पर आकर बैठ जाती है)

गुणवंती : (अपने आप से) कल रात इसी समय "वह" यहाँ बैठे हुए थे। आज आज न जाने कहाँ हैं? रुपये-पैसे भी तो उनके पास कहाँ थे? सामान भी तो कुछ नहीं ले गये। क्या हुआ होगा? कहाँ होंगे?

3) "मान लो मकानवाली बात सम्प्रति और टाल दी जाए तो वह किस प्रकार कान्ता के आने की बात चलाए? मान लो पिता ने कोई भाव नहीं प्रकट किया तो क्या होगा? क्या उस तिरस्कार, अपमान को वह सह लेंगे? मान लो वह सह भी लेंगे तो क्या सावित्री सहेगी? और अगर कहीं वह पूछ बैठे कि जब विवाह पूछकर नहीं किया तो फिर इस बारे में पूछने की क्या ज़रूरत है? तब क्या जवाब दिया जाएगा?

(यह पथ बध था)

4) "हाँ तो, भाइयो! मैं कह रहा था कि दीवार होने पर लगता है कि दीवार है। लेकिन न होने पर किससे क्या कहा जाए? कब सामने वाले की दीवार आपके लिए अभेद हो जाएगी, कुछ नहीं कहा जा सकता। क्यों ऐसी दीवारें मात्र उठती हैं, खिंचती हैं—टूटती नहीं हैं, ढहती नहीं हैं? क्योंकि ये दीवारे संबंध टूटने पर ही उठती हैं। ज़रा सी भी भावना शेष हो तो ये दीवारें नहीं बन पाती हैं।"

1) एकाभिमुख स्थिर संलाप
2) गत्यात्मक एकालाप
3) गत्यात्मक संलाप
4) स्वगत कथन

17.7 सारांश

आपने इस इकाई में वाक्य से ऊपर के स्तर की इकाई "प्रोक्ति" के बारे में पढ़ा। प्रोक्ति को संप्रेषण की वह इकाई माना जाता है, जिसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान होता है। यह आदान-प्रदान सार्थक संलाप के माध्यम से होता है। आपने पढ़ा कि—

- प्रोक्ति का निर्माण वाक्यों से मिलकर होता है, जो आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं।
- प्रोक्ति का स्वरूप उसके आकार द्वारा निर्धारित नहीं किया जाता, बल्कि उसके प्रकार्य द्वारा निर्धारित किया जाता है। इसका संबंध एक शब्द, एक वाक्य, पूरी घटना, प्रसंग या पूरे जीवन वृत से हो सकता है।
- प्रोक्ति की संरचना का आधार संलाप को माना जाता है। इसलिए संलाप को प्रोक्ति की सार्थक इकाई स्वीकार किया जाता है।
- प्रोक्ति में संप्रेषणीयता का तत्व होना आवश्यक है, जो संदर्भ की माँग करता है। यही संदर्भ वक्ता और श्रोता के बीच संप्रेषणीयता की कड़ी बनता है।
- प्रोक्ति में संवाद की स्थिति हमेशा बनी रहती है क्योंकि इसका संबंध भाषा-व्यवहार से होता है।
- प्रोक्ति के दो मुख्य भेद किए जाते हैं—संलाप तथा एकालाप।
- वक्ता और श्रोता की भूमिकाओं के आधार पर संलाप और एकालाप के दो-दो उपभेद और किए जाते हैं—

1) स्थिर संलाप/एकालाप तथा
2) गत्यात्मक संलाप/एकालाप

- संलाप भाषा व्यवहार की वह इकाई है जिसमे कम से कम दो पात्रों के बीच विचारों का परस्पर आदान-प्रदान होता है।
- संलाप में वक्ता तथा श्रोता के अनुभवों में साम्य होना जरूरी है, नहीं तो संप्रेषण संभव नहीं हो पाएगा।
- गत्यात्मक संलाप की तुलना में स्थिर संलाप में श्रोता की भूमिका सक्रिय नहीं होती। इसमें वक्ता तो सक्रिय रूप से भाग लेता है, परन्तु वक्ता की अपेक्षा श्रोता निष्क्रिय ही रहता है।
- एकालाप में वक्ता किसी संदर्भ में स्वयं से बातचीत करता है, अर्थात् अपने आप से कुछ कहता है और उसका जवाब भी खुद ही देता है।
- एकालाप को प्रोक्ति के अंतर्गत रखने का प्रमुख कारण यह है कि इसमें अप्रत्यक्ष रूप से वक्ता-श्रोता की स्थिति बनी रहती है।
- एकालाप तथा स्वगत कथन में कोई सैद्धांतिक अंतर नहीं है। स्वगत कथन में वक्ता अपने आप से कुछ इस प्रकार कहता है, जिसे कोई सुन न सके। इसमें केवल वक्ता ही सक्रिय होता है। जबकि एकालाप में स्वयं से बातचीत की जाती है, जिसमें वक्ता स्वयं वक्ता-श्रोता की भूमिका निभाता है।

- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि "भाषिक संप्रेषण की इकाई को ही प्रोक्ति माना जाता है।"

17.8 शब्दावली

इस पाठ में आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली:

प्रोक्ति
संलाप
एकालाप
संप्रेषण
अभिलक्षण
कथन शैली
गत्यात्मक एकालाप/संलाप
स्थिर एकालाप/संलाप
भाषेतर इकाइयाँ
संप्रेषणीय
संदर्भ
संप्रेषणीयता
सार्थक वाक्य
निरर्थक वाक्य
द्वयाभिमुख संलाप
एकाभिमुख संलाप
स्वगत कथन

17.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) हिंदी का शैक्षिक व्याकरण, सं. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, बालगोविन्द मिश्र तथा भोलानाथ तिवारी (1980), नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

2) शैक्षिक व्याकरण और व्यावहारिक हिंदी कृ.कु. गोस्वामी (1981), आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

17.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) 1. ×
2. √
3. √
4. ×
5. √
6. ×

ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

अभ्यास 2

क) 1. ×
2. √
3. √
4. ×
5. √

ख) इकाई मे स्वयं जाँच करें।

ग) 1) गत्यात्मक संलाप
2) स्वगत कथन
3) गत्यात्मक एकालाप
4) एकाभिमुख स्थिर संलाप